हिंदी दिवस एवं तृतीय अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन, पुणे के अवसर पर प्रकाशित

स्मारिका

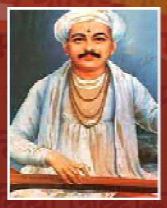

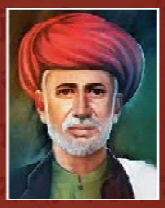

पुणे, 14-15 सितम्बर 2023

यूको बैंक UCO BANK
(भारत सरकार का उपक्रम) (A Govt. of India Undertaking)
सम्मान आपके विश्वास का Honours Your Trust

अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन में यूको बैंक

भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग द्वारा दिनांक 13-14 नवंबर, 2021 को वाराणसी में प्रथम अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन का आयोजन किया गया। चित्र में परिलक्षित हैं यूको बैंक के स्टाल का परिदर्शन करते हुए गृह एवं सहकारिता मंत्री, भारत सरकार माननीय श्री अमित शाह एवं मुख्यमंत्री, उत्तर प्रदेश माननीय श्री योगी आदित्यनाथ।

भारत सरकार, गृह मंत्रलय, राजभाषा विभाग द्वारा दिनांक 14 15 सितंबर, 2022 को सूरत (गुजरात) स्थित पं. दीनदयाल इंडोर स्टेडियम में हिंदी दिवस एवं द्वितीय अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन का आयोजन किया गया। चित्र में परिलक्षित हैं वित्तीय वर्ष 2021-22 हेतु यूको बैंक को राजभाषा कीर्ति पुरस्कार, प्रथम प्रदान करते हुए माननीय गृह एवं सहकारिता मंत्री श्री अमित शाह एवं गृह राज्य मंत्री श्री निशिथ प्रामाणिक तथा पुरस्कार ग्रहण करते हुए तत्कालीन प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी, यूको बैंक श्री सोमा शंकर प्रसाद।

स्मारिका

हिंदी दिवस एवं तृतीय अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन, पुणे के अवसर पर प्रकाशित

संरक्षक

अश्वनी कुमार

प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी

प्रेरणा

राजेन्द्र कुमार साबू

कार्यपालक निदेशक

संपादक

मनीष कुमार महाप्रबंधक

मानव संसाधन, कार्मिक, प्रशिक्षण एवं राजभाषा

संपादन सहयोग

अजयेन्द्रनाथ त्रिवेदी मुख्य प्रबंधक (राजभाषा)

सत्येन्द्र कुमार शर्मा मुख्य प्रबंधक (राजभाषा)

पूनम कुमारी प्रसाद वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा)

यूको बैंक

प्रधान कार्यालय

10, बी.टी.एम. सरणी, कोलकाता-700 001

ईमेल : horajbhasha.calcutta@ucobank.co.in

अनुक्रम

अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन : एक सिंहावलोकन 5

पूनम कुमारी प्रसाद

पुणे का गौरवशाली इतिहास और उज्ज्वल वर्तमान 8

राजीव कुमार नायक

महाराष्ट्र : हिंदी का गढ़ 11

सुभाष चन्द्र साह

महाराष्ट्र की सांस्कृतिक विरासत 14

बेल्लोणा मैथ्यू

इतिहास में महाराष्ट्र 17

ओंकार राम टाक

समाज सुधार और पुनर्जागरण का केन्द्र महाराष्ट्र 20

डॉ. शिल्पी शुक्ला

लोकमान्य तिलक और गीता रहस्य 23

प्रवीण कुमार शर्मा

महाराष्ट्र के गौरव 26

अमित कुमार सरवर

पुणे के दर्शनीय स्थल 30

शिवम उपाध्याय

महाराष्ट्र की सांस्कृतिक विरासत 33

राम अभिषेक तिवारी

गीता के अभिनव व्याखाकार : लोकमान्य तिलक 36

अमरदीप कुलश्रेष्ठ

यूको बैंक में राजभाषा की यात्रा : एक दृष्टि में 39

राजभाषा विभाग, प्रधान कार्यालय

आमुख चित्र परिचय : संत नामदेव, संत ज्ञानेश्वर, संत तुकाराम, संत एकनाथ, छत्रपति शिवाजी महाराज, समाज सुधारक ज्योतिबा फुले, लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक, बाबासाहब भीमराव अंबेडकर और समाज सुधारक सावित्रीबाई फुले।

स्मारिका में व्यक्त विचार लेखकों के हैं, यूको बैंक के नहीं। इन विचारों से यूको बैंक की सहमति हो ही यह आवश्यक नहीं है।

मुद्रक : श्याम कम्प्युटेक, 73, कॉटन स्ट्रीट, कोलकाता - 700 007, ईमेल : shyamcomputech88@gmail.com, कुल पृष्ठ - 40

संदेश

विगत कुछ वर्षों से राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार की पहल पर अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलनों का आयोजन किया जा रहा है। माननीय केन्द्रीय मंत्री तथा विभाग के उच्चाधिकारियों की उपस्थिति में आयोजित किए जा रहे इन सम्मेलनों से सरकार की राजभाषा नीति के कार्यान्वयन में लगे कार्यबल को प्रोत्साहन मिलता है तथा इस अवसर पर होनेवाला विचार-विमर्श प्रतिभागियों के लिए पाथेय बनता है। इस क्रम में हिंदी दिवस समारोह तथा तृतीय अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन पुणे महानगर में 14-15 सितंबर, 2023 को आयोजित किया जा रहा है।

पुणे भारत के प्राचीन इतिहास के वैभव तथा आधुनिक भारत की समृद्धि से अभिषिक्त नगर है। इस महानगर को शिवाजी महाराज से लेकर लोकमान्य बालगंगाधर तिलक, महात्मा ज्योतिबा फुले तथा महात्मा गांधी सदृश प्रणम्य राष्ट्रपुरुषों की कर्मभूमि होने का गौरव प्राप्त है। पुणे के पुराने मुहल्ले तथा ऐतिहासिक भवन स्वाधीनता संग्राम के जीवंत साक्ष्य के रूप में नई पीढ़ी को प्रेरित कर रहे हैं। राष्ट्रीय भावना से प्रेरित होकर यहाँ स्थापित किए गए शिक्षा तथा प्राच्यविद्या संस्थानों ने अब अंतरराष्ट्रीय महत्व प्राप्त कर लिया है।

मुझे प्रसन्नता है कि बैंक के राजभाषा विभाग द्वारा पुणे में आयोजित किए जाने वाले हिंदी दिवस समारोह तथा तृतीय अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन के अवसर पर एक स्मारिका का प्रकाशन किया जा रहा है।

मैं हिंदी दिवस समारोह तथा तृतीय अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन के सफल तथा उद्देश्यपूर्ण आयोजन की हार्दिक कामना करता हूँ।

अश्वनी कुमार
प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी
यूको बैंक, कोलकाता

संदेश

मुझे जानकार प्रसन्नता हुई है कि राजभाषा विभाग, भारत सरकार द्वारा हिंदी दिवस तथा तृतीय अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन का आयोजन पुणे में दिनांक 14-15 सितंबर, 2023 को किया जा रहा है। संघ सरकार की राजभाषा नीति के कार्यान्वयन में ऐसे आयोजनों का बहुत महत्व है।

पुणे शहर को महाराष्ट्र राज्य की सांस्कृतिक राजधानी के रूप में जाना जाता है। यही नहीं, यह शहर ऐतिहासिकता तथा आधुनिकता के सुसमन्वय का अनूठा उदाहरण भी है। उच्च शिक्षा, तकनीकी शोध संस्थान तथा औद्योगिक विकास की दृष्टि से भी इस शहर ने अपनी खास पहचान बनाई है।

हमारे बैंक के राजभाषा विभाग द्वारा हिंदी दिवस तथा तृतीय अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन के अवसर पर एक स्मारिका का प्रकाशन किया जा रहा है। यह स्मारिका हिंदी दिवस तथा तृतीय अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन के आयोजन को यादगार बनाने में सहायक होगी।

मैं इस स्मारिका के प्रकाशन के लिए राजभाषा विभाग, प्रधान कार्यालय की सराहना करता हूँ तथा इस स्मारिका के लिए आलेख लिखने वाले स्टाफ सदस्यों के योगदान के लिए उनका अभिनंदन करता हूँ। मैं आशा करता हूँ कि हमारे अधिक से अधिक स्टाफ सदस्य अपनी लेखन कला को विकसित करेंगे तथा अपने चिंतन से सबको लाभान्वित करेंगे।

हिंदी दिवस तथा तृतीय अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन के लिए मेरी अशेष शुभकामनाएं।

राजेन्द्र कुमार साबू
कार्यपालक निदेशक
यूको बैंक, कोलकाता

संपादकीय

भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग पुणे में हिंदी दिवस तथा तृतीय अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन का आयोजन कर रहा है। इस अवसर को यादगार बनाने के लिए हमने एक स्मारिका के प्रकाशन का निश्चय किया, यह स्मारिका आपके हाथों में है।

महाराष्ट्र हमारे देश का पुण्यप्रदेश है। पुणे महाराष्ट्र का सत्व है। दक्कन के पठार पर सह्याद्रि की शृंखला से पोषित पुणे ने अपनी विशिष्ट पहचान बनाई है। इरादों की दृढ़ता तथा भावों की मधुरता का संगम है पुणे के चरित्र में। यहाँ ज्ञान की अमिट प्यास रही है तथा कला की सतत उपासना चली है। सामाजिक रूढ़ियों का डटकर मुकाबला करने का अवसर हो या शिक्षा के प्रचार-प्रसार की बात, पुणे ने पूरे देश को राह दिखाई है। मध्यकाल में यदि पुणे ने भारतीय शौर्य गाथा का प्रतिमान खड़ा किया तो ब्रिटिश हुकूमत के समय स्वाधीनता को अपना जन्मसिद्ध अधिकार बताया। सनातन मूल्यों के परिक्षण के साथ सामयिक नवाचार को अंगीकार करता पुणे आत्मविश्वास के साथ भविष्य की ओर बढ़ रहा है।

हमने खास तौर पर पुणे तथा सामान्य तौर पर महाराष्ट्र को सामने रखकर इस स्मारिका की रूपरेखा बनाई। स्मारिका के कलेवर को देखते हुए महाराष्ट्र तथा पुणे के अवदान को पूरी तरह से समेटना असंभव ही था। तथापि हमने एक चेष्टा की है। हमें विश्वास है यह स्मारिका हिंदी दिवस तथा तृतीय अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन, 2023 की स्मृति को सँजोने में सहायक होगी। हम समझते हैं कि इस स्मारिका में अपूर्णता तथा त्रुटियां विद्यमान होंगी। कृपालु पाठक इसे नजरंदाज करें।

मनीष कुमार
महाप्रबंधक
मानव संसाधन कार्मिक
प्रशिक्षण एवं राजभाषा

अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन : एक सिंहावलोकन

पूनम कुमारी प्रसाद
वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा)
प्रधान कार्यालय, कोलकाता
जन्म स्थान : कोलकाता
शैक्षिक योग्यता : स्नातकोत्तर (हिंदी), बी.एड.,
डिप्लोमा इन इंफॉर्मेशन टेक्नोलॉजी (डीआईटी)
विशेष उपलब्धियाँ/रुचि :
यूजीसी राष्ट्रीय पात्रता परीक्षा उत्तीर्ण,
भ्रमण, अध्ययन
विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में आलेख एवं अन्य रचनाओं का
प्रकाशन, राष्ट्र स्तरीय विभिन्न निबंध आदि
प्रतियोगिताओं में विजेता

राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार ने अखिल भारतीय स्तर पर भारत सरकार के विभिन्न कार्यालयों/संस्थाओं/उपक्रमों में राजभाषा कार्यान्वयन को नई दिशा, गति, ऊर्जा एवं ऊँचाई प्रदान करने के उद्देश्य से तथा वर्ष 2047 तक संपूर्ण भारतवर्ष को हिंदीमय करने की दृढ संकल्पना को मूर्तरूप देने हेतु अखिल भारतीय स्तर पर क्रमबद्ध तरीके से राजभाषा सम्मेलन आयोजित करने का निर्णय लिया है। इस क्रम में अब तक दो अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन हो चुके हैं। पुणे में तीसरा सम्मेलन हो रहा है।

प्रथम अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन

भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग ने अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन शृंखला का शुभारंभ 13-14 नवंबर, 2021 को वाराणसी स्थित 'व्यापार केंद्र' में प्रथम अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन आयोजित कर किया।

सम्मेलन की अध्यक्षता माननीय गृह एवं सहकारिता मंत्री, भारत सरकार श्री अमित शाह जी ने की। सम्मेलन के विशिष्ट अतिथि उत्तर प्रदेश के माननीय मुख्यमंत्री श्री योगी आदित्यनाथ जी थे। सम्मेलन में सुश्री अंशुली आर्या, सचिव, राजभाषा विभाग एवं डॉ. मीनाक्षी जौली, संयुक्त सचिव, राजभाषा उपस्थित थीं।

माननीय गृह एवं सहकारिता मंत्री, भारत सरकार श्री अमित शाह की अध्यक्षता में मुख्य सत्र का आयोजन किया गया। सचिव राजभाषा सुश्री अंशुली आर्या जी ने अपने स्वागत संबोधन के माध्यम से सभी गणमान्य अतिथियों एवं सभागार में उपस्थित सभी हिंदी प्रेमियों का सम्मेलन में स्वागत एवं अभिनंदन किया तथा दो दिवसीय अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन के आयोजन के उद्देश्य एवं विभिन्न सत्रों पर संक्षिप्त में अपने विचार रखे। इसी क्रम में भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग की पत्रिका 'राजभाषा भारती' के नवीनतम अंक का लोकार्पण किया गया।

माननीय गृह एवं सहकारिता मंत्री, भारत सरकार श्री अमित

शाह जी ने अपने संबोधन में स्वतंत्रता संग्राम को गति देने एवं सम्पूर्ण भारत को एकजुट रखने में हिंदी की महत्वपूर्ण भूमिका पर अपने विचार रखे। साथ ही वर्तमान दौर में राजभाषा हिंदी के विविध आयामों पर अपने विचार रखें तथा भारतीयों को राजभाषा के साथ-साथ क्षेत्रीय भाषाओं को भी समान रूप से सम्मान देने एवं दैनिक जीवन में व्यवहार में लाने का संदेश दिया।

सम्मेलन के अगले सत्र में समानांतर कई प्रासंगिक, उपयोगी एवं ज्ञानवर्धक विषयों पर सत्र आयोजित किए गए। सत्रों का विवरण निम्नवत हैं :-

13 नवंबर, 2021 को पहला सत्र श्री हरिवंश नारायण सिंह, उप सभापति, राज्यसभा की अध्यक्षता में 'स्वतंत्रता और स्वतंत्र भारत में संपर्क भाषा एवं जनभाषा के रूप में हिंदी की भूमिका' विषय पर आयोजित किया गया। 13 नवंबर, 2021 को इसके समानांतर प्रोफेसर राम मोहन पाठक, पूर्व कुलपति, दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा, चेन्नई की अध्यक्षता में 'मीडिया में हिंदी : प्रभाव एवं योगदान' पर सत्र आयोजित किया गया।

13 नवंबर, 2021 को दूसरा सत्र प्रोफेसर रीता बहुगुणा जोशी, संसद सदस्य की अध्यक्षता में 'राजभाषा के रूप में हिंदी की विकास यात्रा और योगदान' विषय पर सत्र आयोजित किया गया। 13 नवंबर, 2021 को इसके समानांतर सत्र डॉ. मनोज राजोरिया, संसद सदस्य, संयोजक संसदीय राजभाषा समिति की अध्यक्षता में 'वैश्विक संदर्भ में हिंदी - चुनौतियाँ और संभावनाएं' विषय पर सत्र आयोजित किया गया।

13 नवंबर, 2021 को तीसरा सत्र भारतेंदु सभागार में श्री केसरी नाथ त्रिपाठी, पूर्व राज्यपाल (पश्चिम बंगाल) एवं साहित्यकार की अध्यक्षता में 'भाषा चिंतन की भारतीय परंपरा और संस्कृति के निर्माण में हिंदी की भूमिका' विषय पर सत्र आयोजित किया गया। 13 नवंबर, 2021 को इसके समानांतर सत्र जयशंकर प्रसाद सभागार में श्री हृदय नारायण दीक्षित, अध्यक्ष, उत्तर प्रदेश, विधानसभा की अध्यक्षता में 'न्यायपालिका में हिंदी - प्रयोग और संभावनाएं' विषय पर आयोजित किया गया।

14 नवंबर, 2021 को पहला सत्र प्रेमचंद सभागार में श्री रजनीश कुमार शुक्ल, कुलपति, महात्मा गाँधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा की अध्यक्षता में 'रंगमंच, सिनेमा और हिंदी' विषय पर सत्र आयोजित किया गया। 14 नवंबर, 2021 को कबीर सभागार में प्रोफेसर विशम्भर मिश्रा, बनारस हिंदू विश्वविद्यालय, वाराणसी की अध्यक्षता में 'काशी का हिंदी साहित्य में योगदान' विषय पर सत्र आयोजित किया गया।

14 नवंबर, 2021 को समापन सत्र प्रेमचंद सभागार में आयोजित किया गया। समापन सत्र में श्री आनंद कुमार, निदेशक (नीति) द्वारा दो दिवसीय सम्मेलन का संक्षेप सार प्रस्तुत किया गया। तत्पश्चात सुश्री अंशुली आर्या, सचिव, राजभाषा विभाग ने दो दिवसीय सम्मेलन पर अपना वक्तव्य रखा। श्री अजय कुमार मिश्रा, माननीय गृह राज्यमंत्री ने अपने अध्यक्षीय संबोधन में दो दिवसीय प्रथम अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन के आयोजन की प्रासंगिकता एवं महत्ता पर अपने विचार रखें। सम्मेलन में शामिल सभी हिंदी सेवियों को दैनिक कार्यों में अधिक से अधिक हिंदी का प्रयोग करने हेतु प्रोत्साहित किया। भारतीय होने के नाते हमारा दायित्व है कि विश्व की सबसे वैज्ञानिक भाषा हिंदी को देश की राजभाषा के साथ-साथ राष्ट्रभाषा का दर्जा भी दिलाने के लिए दैनिक आधार पर पूरी निष्ठा एवं लगन के साथ कार्य करें। कार्यक्रम के अंतिम सत्र में डॉ. मीनाक्षी जौली, संयुक्त सचिव, राजभाषा विभाग ने सभी को धन्यवाद ज्ञापित करते हुए औपचारिक रूप से दो दिवसीय अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन समाप्ति की घोषणा की।

हिंदी दिवस एवं द्वितीय अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन

भारत सरकार, गृह मंत्रलय, राजभाषा विभाग द्वारा दिनांक 14-15 सितंबर, 2022 को सूरत (गुजरात) स्थित पं. दीनदयाल इंडोर स्टेडियम में हिंदी दिवस एवं द्वितीय अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन का आयोजन किया गया। सम्मेलन के मुख्य अतिथि माननीय गृह एवं सहकारिता मंत्री श्री अमित शाह थे। कार्यक्रम में गृह राज्य मंत्री श्री निशिथ प्रामाणिक, गृह राज्य मंत्री श्री अजय कुमार मिश्र, विदेश एवं शिक्षा राज्य मंत्री श्री रामकुमार संगमा ने विशिष्ट अतिथि के रूप में भाग लिया। मंच पर श्री भर्तृहरि मेहताब, उपाध्यक्ष, संसदीय राजभाषा समिति एवं श्री भूपेंद्र भाई पटेल, मुख्यमंत्री, गुजरात एवं गुजरात राज्य सरकार के गृह मंत्री श्री हर्ष संघवी भी उपस्थित थे।

उक्त सम्मेलन में देशभर से सचिव, अतिरिक्त सचिव, संयुक्त सचिव एवं विभिन्न उपक्रमों के सीएमडी, अन्य गणमान्य व्यक्ति एवं संसदीय राजभाषा समिति के सदस्य भी उपस्थित थे। सम्मेलन में देशभर से लगभग 10000 राजभाषा अधिकारियों ने अपनी उपस्थिति सुनिश्चित की।

माननीय गृह एवं सहकारिता मंत्री श्री अमित शाह ने अपने अध्यक्षीय संबोधन में सर्वप्रथम सभी को हिंदी दिवस की शुभकामानाएं दी। 2047 तक संपूर्ण भारतवर्ष को हिंदीमय करने के संकल्प को मूर्तरूप देने का दृढ़ निश्चय को दोहराया। हिंदी भाषा के विकास क्रम में गुजरात के मध्ययुगीन संत श्री नरसी मेहता जी के योगदान पर विशेष रूप से प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि महात्मा गांधी ने हिंदी भाषा के विकास में अतुलनीय योगदान दिया है। अपने संबोधन में उन्होंने कहा कि हमें हिंदी के साथ-साथ क्षेत्रीय भाषाओं को समान रूप से सम्मान देना चाहिए तथा एक क्षेत्रीय भाषा में उपलब्ध साहित्य का अन्य क्षेत्रीय भाषाओं एवं हिंदी में अनुवाद कर्म को जारी रखना चाहिए इससे हमारा भारतीय साहित्य समृद्ध होगा एवं अखिल भारतीय स्तर पर ज्ञान विज्ञान के आदान-प्रदान का क्रम निर्बाध रूप से जारी रहेगा।

उद्घाटन सत्र में माननीय गृह एवं सहकारिता मंत्री श्री अमित शाह के कर-कमलों द्वारा 'कंठस्थ 2.0' का उद्घाटन किया गया। माननीय गृह एवं सहकारिता मंत्री श्री अमित शाह ने सभी भारतीयों को कार्यालयीन अनुवाद कर्म हेतु 'कंठस्थ 2.0' पर कार्य करने एवं तकनीक के क्षेत्र में भारतीयों को आत्मनिर्भर भारत अभियान में सहयोग का आह्वान किया।

दो दिवसीय सम्मेलन में कई प्रासंगिक, उपयोगी एवं ज्ञानवर्धक विषयों पर सत्र आयोजित किए गए।

14 सितंबर, 2022 को 'विगत 75 वर्षों में राजभाषा हिंदी की विकास-यात्रा' विषय पर सत्र आयोजित किया गया। 14 सितंबर, 2022 को युवाओं को गर्व की अनुभूति कराती हिंदी' विषय पर सत्र आयोजित किया गया। 15 सितंबर, 2022 को 'महात्मा गाँधी का भाषा चिंतन और राष्ट्र के एकीकरण में सरदार पटेल का योगदान' विषय पर सत्र आयोजित किया गया। 15 सितंबर, 2022 को 'भाषाई समन्वय का आधार है हिंदी' विषय पर सत्र आयोजित किया गया। 15 सितंबर, 2022 को 'भारतीय सिनेमा और हिंदी' विषय पर सत्र आयोजित किया गया। डॉ. चंद्र प्रकाश द्विवेदी, फिल्म निर्माता एवं निर्देशक ने सत्र की अध्यक्षता की।

प्रथम एवं द्वितीय अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन के आयोजन के माध्यम से भारत सरकार ने हिंदी के साथ-साथ क्षेत्रीय भाषाओं के लिए सुंदर पृष्ठभूमि तैयार करने की सशक्त पहल की है। राष्ट्रीय आंदोलन के दौरान हिंदी ने संपूर्ण भारतवर्ष को एक सूत्र में बाँधने की महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। हिंदी की महत्वपूर्ण विकास यात्रा में क्षेत्रीय भाषाओं एवं हमारी बोलियों ने अतुलनीय सहयोग दिया है। संस्कृत के साथ-साथ हमारी क्षेत्रीय भाषाएं एवं बोलियों से शब्द ग्रहण कर हिंदी सुसज्जित एवं विकसित हुई है। दोनों सम्मेलनों के माध्यम से गृह मंत्रालय, भारत सरकार ने स्पष्ट तौर पर यह संदेश दिया कि सरकार हिंदी के साथ-साथ क्षेत्रीय भाषाओं के विकास के लिए भी प्रतिबद्ध है।

पुणे का गौरवशाली इतिहास और उज्ज्वल वर्तमान

राजीव कुमार नायक
मुख्य प्रबंधक (राजभाषा)
अंचल कार्यालय, वाराणसी
जन्म स्थान : कोलकाता
शैक्षिक योग्यता : एम.ए. (हिन्दी)
विशेष उपलब्धियाँ/रुचि : संगीत सुनना

पुणे को महाराष्ट्र राज्य की सांस्कृतिक राजधानी के रूप में जाना जाता है। यह शहर आधुनिकीकरण के साथ विरासत और संस्कृति का आदर्श मिश्रण है। लेकिन हमारे स्वतंत्रता आंदोलन में भी पुणे की बहुत महत्वपूर्ण भूमिका रही है। शिवाजी महाराज, लोकमान्य तिलक, बाबासाहब भीमराव अम्बेडकर जैसे महापुरुषों से लेकर शिवाजी महाराज के सिंहगढ़ के किले से शुरू कर यरवदा जेल जैसे स्थल जहां हमारे कई स्वतंत्रता सेनानियों को कैद किया गया था पुणे से संबंधित हैं। पुराने पुणे शहर के कोने-कोने में राष्ट्रीय स्वतंत्रता का इतिहास धड़क रहा। पुणे नगर आज अपनी उज्ज्वल विरासत की बुनियाद पर समृद्ध वर्तमान के साथ के बुलंद भारत के इरादों का परचम लहरा रहा है।

इतिहास के झरोखे से झाँकते हैं तो पता चलता है राष्ट्रकूट राजवंश के दौरान वर्तमान पुणे शहर को पुन्नका तथा पुण्यपुर के नाम से जाना जाता था। सन् 758 और 768 की तांबे की प्लेटों से पता चलता है कि यादव राजवंश ने इस शहर का नाम पुनकविषय और पुण्य विषय रखा था। 'विषय' का अर्थ है भूमि, और 'पुनक' और 'पुण्य' का अर्थ है पवित्र। प्रसिद्ध इतिहास विद्वान पांडुरंग बालकावड़े ने कहा कि छत्रपति शिवाजी महाराज के पिता शाहजी राजे भोसले के शासनकाल में इस शहर को 'कस्बे पुणे' के नाम से जाना जाता था। 1857 में ब्रिटिश शासनकाल में यह 'पूना' बन गया और आखिरी बार 1978 में इसे पुणे में बदल दिया गया।

पुणे ने देखा है कि बड़ी वीरता के साथ 5 अप्रैल 1663 की रात को मराठा नेता शिवाजी ने शाहिस्ता खान पर आक्रमण करके उसे भागने पर मजबूर कर दिया था । सन् 1714 में मराठा शासक शाहू ने चितपावन ब्राह्मण बालाजी विश्वनाथ को अपना पेशवा नियुक्त किया। लगभग उसी अवधि में शाहू के एक मंत्री पंतसचिव की आभारी मां ने बालाजी को पंतसचिव की जान बचाने के लिए पुणे के आसपास का एक बड़ा भूखंड उपहार में दिया था।

सन् 1720 से 1818 तक पुणे ब्रिटिश राज का एक प्रमुख

राजनीतिक और प्रशासनिक केंद्र था। यह शहर मराठा संघ के खिलाफ ब्रिटिश सैन्य अभियानों का आधार शिविर बन गया और ब्रिटिश भारत और मध्य भारत के अन्य राज्यों के बीच मध्यस्थ के रूप में कार्यशील रहा। पुणे ने भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में अनुकरणीय भूमिका निभाई। यह शहर राजनीतिक और सामाजिक गतिविधियों का केंद्र रहा तथा भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस और भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के कई प्रमुख नेताओं का आवास था। महात्मा गांधी, सरदार पटेल, जवाहरलाल नेहरू और राजेंद्र प्रसाद सभी ने विभिन्न अवसरों पर पुणे का दौरा किया और विभिन्न सार्वजनिक बैठकों और रैलियों में भाग लिया। शहर में छात्र शक्ति की सक्रियता की भी एक मजबूत परंपरा थी और यह स्वतंत्रता संग्राम में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाले अनेक छात्र नेताओं का निवास रहा। दिनांक 27 सितंबर 1932 को पुणे में अस्वस्थता की दशा में गांधीजी ने अंबेडकर के पूना पैक्ट पर हस्ताक्षर किए।

पुणे 19वीं और 20वीं शताब्दी में भारत के स्वतंत्रता आंदोलन का केंद्र भी था। पुणे में विद्रोह की चिंगारी 1857 में तब ही फूटी थी जब सदाशिव पेठ के नरसिंह मंदिर में रहने वाले वासुदेव बलवंत फड़के ने खुन्या मुरलीधर मंदिर में हथियार प्रशिक्षण सीखा और अंग्रेजी भाषा के उपयोग के खिलाफ लोगों को संबोधित करना शुरू किया। पूना सार्वजनिक सभा की स्थापना 1870 में एम.जी. रानाडे, जी.वी. जोशी, एस.एच. चिपलंकर और उनके सहयोगियों द्वारा की गई थी।। यह एक सामाजिक-राजनीतिक संगठन था जो किसानों के कानूनी अधिकारों के लिए ब्रिटिश सरकार और जनता के बीच मध्यस्तता करता था।

पुणे में हमें एक हेरिटेज ट्रेल मिलता है। मध्य काल के इतिहास से जुड़ा एक स्मारक शनिवार वाडा है। यह मूलतः मराठा साम्राज्य के पेशवा बाजीराव की राजधानी का किला था। इसका निर्माण वर्ष 1732 ई. में करवाया गया था। इस महल से कई वीर मराठा योद्धाओं का इतिहास जुड़ा हुआ है जिसमें पेशवा बाजीराव I और पेशवा बाजीराव II प्रमुख थे। इस ट्रेल से स्वतंत्रता सेनानियों से संबंधित स्मारक भी जुड़े हैं। इनमें एक आगा खान पैलेस है जहां महात्मा गांधी को कैद कर रखा गया था। फिर आता है केसरी वाड़ा, जहां लोकमान्य तिलक रहते थे और जहां से उनके संपादकत्व में मराठी भाषा में केसरी और अंग्रेजी भाषा में मराठा अखबार निकलते थे। इसी ट्रेल से जुड़ा है फुलेवाड़ा, जहां महान समाज सुधारक महात्मा ज्योतिबा फुले ने पिछड़ा वर्ग के लोगों के लिए पीने का पानी उपलब्ध कराने के लिए एक कुआं खुदवाया था। गणेशखिंड रोड, सदाशिव पेठ, नारायण पेठ जैसे क्षेत्र स्वाधीनता संग्राम में पुणे के योगदान के गवाह हैं। इस संबंध में कहा जा सकता है कि हालांकि आज के पुणे शहर ने स्वाधीनता के बाद के आर्थिक तथा सामाजिक उत्कर्ष की अनेक सीढ़ियाँ चढ़ ली हैं, वह आज भी उन स्वतंत्रता आंदोलन से जुड़ी यादों को अपने सीने में सुरक्षित रखे हुए है।

पुणे के गणेशखिंड रोड पर चापेकर भाइयों दामोदर हरि चापेकर और बालकृष्ण हरि चापेकर ने 22 जून 1897 को ब्रिटिश अधिकारी डब्ल्यू.सी. रैंड और उनके सैन्य अनुरक्षण लेफ्टिनेंट आयर्स्ट की हत्या कर दी। रैंड प्लेग कमिश्नर के रूप में प्लेग निवारण के नाम पर भारतीयों पर किए गए अत्याचार के लिए कुख्यात हो चुका था। इससे जनता में जबरदस्त आक्रोश था। 1857 के विद्रोह के बाद भारत में उग्र राष्ट्रवाद का यह सबसे उग्र उदाहरण था। शहर के पेठ क्षेत्र से आजादी की लड़ाई शुरू हुई थी। पुणेकरों ने अंग्रेजों के खिलाफ अपना आक्रोश शनिवार वाड़ा में यूनियन जैक फहराकर 1817 निकाला था।

लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक और गोपाल कृष्ण अगरकर जैसे स्वतंत्रता सेनानी शनिवार पेठ के ताम्बत अली में रहते थे। बाद में तिलक विंचुरकर वाडा और फिर गायकवाड वाडा में स्थानांतरित हो गए, जिसे अब नारायण पेठ में केसरी वाडा के नाम से जाना जाता है। यहीं पर उन्होंने स्वराज का मुखपत्र केसरी अखबार शुरू किया। अंग्रेज तिलक के घर और आगंतुकों पर कड़ी नजर रखते थे। गायकवाड़ वाडा तिलक की राजनीतिक गतिविधि का केंद्र भी

था। तिलक ने लोगों का मनोबल बढ़ाने और भारतीय के रूप में उनकी पहचान की भावना की पुष्टि करने के लिए गणेश उत्सव और शिवाजी जयंती को सार्वजनिक स्तर पर मनाने का निर्णय लेना। यह समान विचारधारा वाले बुद्धिजीवियों के साथ महत्वपूर्ण बैठकों का अवसर भी सिद्ध हुआ। यह स्थान आज इस अखबार और इसके संपादक के रसूख का प्रमाण है।

पुणे के शिक्षण संस्थानों में फर्ग्यूसन कॉलेज तथा डेक्कन कालेज का देश-विदेश में नाम है। फर्ग्यूसन कॉलेज की स्थापना डेक्कन एजुकेशन सोसाइटी (डीईएस) द्वारा सन् 1885 में की गई थी। डेक्कन कॉलेज की स्थापना 6 अक्टूबर, सन् 1821 को पुणे के विश्रामबाग वाडा में एक संस्कृत स्कूल को मिला कर एक 'हिन्दू कालेज' के नाम से की गई थी। यह देश का तीसरा सबसे पुराना और महाराष्ट्र का पहला कॉलेज हुआ करता था। विनायक दामोदर सावरकर फर्ग्यूसन कॉलेज में पढ़ रहे थे। शहर के छात्र उनके क्रान्तिकारी विचारों से प्रेरित हुए और उन्होंने विमलाबाई गरवारे स्कूल के पास विदेशी कपड़ों की होली जलाई। तिलक और वीर सावरकर ने शहर में स्वदेशी वस्तुओं का प्रचार शुरू किया। संदेश बिल्कुल स्पष्ट था – भारतीय बनें, भारतीय खरीदें, और भारत के विकास में योगदान दें। नूतन मराठी विद्यालय के एक दूसरे इलाके में अगस्त 1942 में भारत छोड़ो आंदोलन के बारे में महात्मा गांधी के आह्वान से पुणे में हिंसक आंदोलन हुआ। शहर के इतिहास में पहली और आखिरी बार विदेशी सरकार ने निहत्थे नागरिकों पर टैंक और मशीनगनों का इस्तेमाल किया था। गोलीबारी में कई निर्दोष लोगों की जान चली गई।

शोध संस्थानों में पुणे के भांडारकर प्राच्य शोध संस्थान की अपार प्रसिद्धि है। इसकी स्थापना 6 जुलाई 1917 को हुई थी। इसका नाम रामकृष्ण गोपाल भंडारकर (1837-1925) के नाम पर रखा गया था। उन्हें भारत में इंडोलॉजी का संस्थापक माना जाता था। यह संस्थान पुरानी संस्कृत और प्राकृत पांडुलिपियों के संग्रह के लिए प्रसिद्ध है। भंडारकर प्राच्य शोध संस्थान के मुख्य विभाग हैं–हस्तलिखित ग्रंथ विभाग, प्रकाशन विभाग, शोध विभाग तथा महाभारत विभाग। यह संस्थान उन्नत शोध के लिए छात्रों को ओरिएंटल लाइब्रेरी सामयिक ग्रंथ सूची, पत्रिका लेखों के डाइजेस्ट, कार्ड इंडेक्स, इलेक्ट्रॉनिक मीडिया और अन्य सामग्री उपलब्ध कराने में अग्रणी है। यह सामान्य तौर पर प्राच्य अध्ययन से जुड़े सभी बिंदुओं पर परामर्श और सूचना के लिए एक ब्यूरो के रूप में कार्यरत है।

पुणे के नागर रोड पर स्थित शानदार आगा खान पैलेस है। इसे सुल्तान मुहम्मद शाह आगा खान III ने 1892 में बनवाया था। यह सुसज्जित लॉन वाला एक भव्य पैलेस है। इस महल ने भारत के स्वतंत्रता आंदोलन में भूमिका निभाई और 1942 से 1944 तक भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान महात्मा गांधी, कस्तूरबा गांधी, सरोजिनी नायडू और महादेव देसाई जैसे नेताओं को यहां कैद किया गया था। यहाँ अब गांधी राष्ट्रीय स्मारक सोसाइटी का मुख्यालय है। महादेव देसाई तथा कस्तूरबा गांधी की समाधि इसी महल के परिसर में है। 13 एकड़ भूमि में फैले इस महल में एक गांधी संग्रहालय भी है जहां उनके व्यक्तिगत सामान जैसे बर्तन, चप्पल, कपड़े और पत्र प्रदर्शित किए गए हैं। महल की दीवारें भी अतीत के किस्से बयान करती हैं और स्वतंत्रता संग्राम के दौरान महात्मा गांधी की श्वेत-श्याम तस्वीरों से सजी हैं।

पुणे स्थित यरवदा जेल 150 साल पुरानी है। इस जेल का हमारे स्वतंत्रता संग्राम में अत्यधिक महत्व रहा है। यहीं पर लोकमान्य तिलक, महात्मा गांधी, पंडित नेहरू, मोतीलाल नेहरू, सरदार वल्लभभाई पटेल जैसे प्रसिद्ध क्रांतिकारियों और स्वतंत्रता सेनानियों को कैद किया गया था। दरअसल, इसी परिसर में एक पेड़ के नीचे महात्मा गांधी और बाबा साहेब अंबेडकर के बीच समाज के दबे-कुचले वर्ग के उत्थान के लिए हुए समझौते पूना पैक्ट पर हस्ताक्षर हुए थे। महाराष्ट्र राज्य सरकार द्वारा जेल को पर्यटन के लिए खोले जाने के बाद अब जेल के प्रांगण में खड़े उस पुराने पेड़ को देखा जा सकता है जहां बैठ कर पूना पैक्ट पर हस्ताक्षर किए गए।

शेष भाग पृष्ठ 19 पर.....

महाराष्ट्र : हिंदी का गढ़

जय जय महाराष्ट्र माझा, गर्जा महाराष्ट्र माझा
जय जय महाराष्ट्र माझा, गर्जा महाराष्ट्र माझा

महाराष्ट्र के उक्त राज्यगीत में गौरवगान है – राज्य की सांस्कृतिक विरासत, शौर्य एवं महानता का। महाराष्ट्र साहित्यिक परंपरा, सांस्कृतिक उन्नयन एवं आर्थिक समृद्धि की दृष्टि से भारतवर्ष का महत्वपूर्ण राज्य है। नमन है महाराष्ट्र की धरा को, जहां अवतरित होकर अनेक संतों एवं महापुरुषों ने मानवता का कल्याण किया एवं जीवन के हर क्षेत्र को अपनी साधना की लौ से आलोकित किया है।

यह हिंदी का सौभाग्य है कि देश एवं जीवन के हर क्षेत्र के लोगों ने इसे गले लगाया है। हिंदी भाषियों ने हिंदी की जितनी सेवा की है, हिंदीतर भाषियों की हिंदी साधना किसी भी मायने में उनसे कम नहीं है। हिंदी की विकास यात्रा में भारतीय संत परंपरा की विशिष्ट भूमिका रही है। हिंदी साहित्य के इतिहास पर दृष्टिपात करने पर हम पाते हैं कि मध्यकाल का साहित्य भक्ति काव्य के रूप में उज्ज्वल, सशक्त, समृद्ध और विविधतापूर्ण है। लोकजीवन में वह कभी लोकोक्ति के रूप में, कभी कहावत बनकर तो कभी उदाहरण की तरह निरंतर प्रयोग में आता रहा है। वह साहित्य हमारे संस्कारों में घुल मिल गया है। भारत के विभिन्न प्रदेशों में अवतरित संतों ने भक्तिभाव से ओत-प्रोत एवं सरस रचनाओं से जन-जन को परिपूर्ण जीवन जीने की प्रेरणा दी है। पंजाब के गुरुनानक, उत्तर प्रदेश के कबीर - सूर - तुलसी, राजस्थान की मीरा, गुजरात के नरसी मेहता, बंगाल के चैतन्य महाप्रभु एवं दक्षिण के आलवार आदि भक्त कवियों की तरह महाराष्ट्र में भी अखंड परंपरा विकसित होती रही है। भारत के मध्य-पश्चिम में स्थित होने से सभी प्रांतों को जोड़ने का गुरुत्तर दायित्व भी नियति द्वारा महाराष्ट्र को सौंपा गया है। अपने भक्ति भावों को सुदूर तक पहुँचाने की दृष्टि से महाराष्ट्र के कई संतों ने मराठी के साथ हिंदी

सुभाष चन्द्र साह
मुख्य प्रबंधक (राजभाषा)
अंचल कार्यालय, भागलपुर
जन्म स्थान : कुल्हड़िया (खगड़िया)
शैक्षिक योग्यता : एम.ए., एम.एड.
विशेष उपलब्धियाँ/रुचि : विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में आलेख एवं अन्य रचनाओं का प्रकाशन,
राष्ट्र स्तरीय विभिन्न निबंध प्रतियोगिताओं के विजेता,
राष्ट्र स्तरीय विभिन्न सेमिनारों में पत्र प्रस्तुति

में भी रचनाएं प्रस्तुत की हैं एवं इसे अपने प्रवचन एवं उपदेश का माध्यम बनाया है।

संत नामदेव, संत एकनाथ, संत तुकाराम एवं संत रामदास आदि अनेक महान संतों ने अपने कालखंडों में विशाल जन-समूह को मराठी के साथ-साथ हिंदी में भी अपनी सरस भक्ति-भावपूर्ण रचनाओं से सुसंकारित किया। इतना ही नहीं इन संतों की शिष्य परंपरा ने भी अपने क्षेत्र में हिंदी का विकास किया है।

गुरु ग्रंथ साहिब में नामदेव के अभंग संकलित हैं। संत कबीर के पदों पर भी नामदेव के विचारों का प्रभाव दृष्टिगोचर होता है।

हिंदी में प्रकट संत नामदेव की भक्ति का उत्कर्ष द्रष्टव्य है–

हरि नांव सकल सुषन की रासी।
हरि नांव काटै जम की पासी।।
हरि नांव सकल भुवन ततसारा।
हरि नांन नामदेव उतरे पारा।।

इसी तरह संत तुकाराम के हिंदी पद हमें गहराई में ले जाते हैं –

तुका संगत तिन से कहिए जिन थे सुख दुना।
दुर्जन तेरा मू काला थी तो प्रेम घटाए।।

इन संतों की हिंदी रचनाओं के मूल प्रेरक स्रोतों को ढूंढने पर पता चलता है कि संपूर्ण भारत को जोड़ने वाली एक जनभाषा के रूप में हिंदी भाषा को इन संतों ने दसवीं-ग्यारहवीं शताब्दी में ही हृदय से स्वीकार कर लिया था। नामदेव एवं उनके मार्गदर्शक ज्ञानेश्वर के पूर्व भी नाथ संप्रदाय के स्वामी मुकुंद राज एवं महानुभाव संप्रदाय के प्रवर्तक चक्रधर की हिंदी रचनाएं प्राप्त होती है।

देश के स्वतंत्रता संग्राम में महाराष्ट्र का अविस्मरणीय योगदान है। महाराष्ट्र के स्वतंत्रता सेनानियों ने हिंदी की शक्ति को पहचाना था। हिंदी के राष्ट्रीय महत्व को देखते हुए इसे अपनी अभिव्यक्ति का माध्यम बनाया, जिससे हिंदी भी समृद्ध हुई। ऐसे महापुरुषों में महादेव गोविंद रानाडे, लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक, माधवराव सप्रे, विनोबा भावे आदि का नाम आदर के साथ लिया जाता है।

लोकमान्य बालगंगाधर तिलक ने दृढ़ता से यह विश्वास व्यक्त किया था कि हिंदी को भारत की राष्ट्रभाषा के रूप में अपनाकर एक समान संपर्क भाषा की व्यावहारिक आवश्यकता की पूर्ति भी की जा सकती है तथा इसके माध्यम से विदेशी भाषा की निर्भरता को कम किया जा सकता है। तिलक ने 1905 में वाराणसी की यात्रा की थी। उस दौरान उन्होंने नागरी प्रचारिणी सभा की एक सभा को भी संबोधित किया था। हिंदी के विकास में काशी की नागरी प्रचारिणी सभा का अपना विशेष योगदान रहा है। उसी नागरी प्रचारिणी सभा में तिलक ने कहा था कि निःसंदेह हिंदी ही देश की संपर्क और राजभाषा हो सकती है। इतना ही नहीं उन्होंने देनवागरी लिपि को सभी भारतीय भाषाओं की एकसमान लिपि के रूप में स्वीकार किए जाने की पुरजोर वकालत की।

संत विनोबा भावे ने हिंदी की समृद्धि के लिए स्तुत्य कार्य किया है। विनोबा जी ने कहा था कि–

'मैं दुनिया की सब भाषाओं की इज्जत करता हूँ, किंतु मेरे देश में हिंदी की अवमानना हो, यह मैं सहन नहीं सकता।'

देश के अग्रणी नेताओं में विनोबा भावे ने इस ओर पहले ही ध्यान आकृष्ट किया था कि नागरी लिपि से बढ़कर कोई वैज्ञानिक लिपि नहीं है। उनका स्पष्ट विश्वास था कि हिंदी की प्रगति को कोई भी शक्ति रोक नही सकती। इस संदर्भ में उनका यह कथन भी याद आ जाता है कि हिंदी को गंगा नहीं समुद्र बनना होगा।

मराठी भाषी माधव राव सप्रे हिंदी के महान साहित्यकार एवं पत्रकार थे। संस्थाओं को गढ़ना एवं लोगों को राष्ट्र के काम के लिए प्रेरित करना सप्रेजी के भारत प्रेम का अनन्य उदाहरण है । उन्होंने नागपुर से 1906 ई. में लोकमान्य तिलक के मराठी केसरी को हिंदी केसरी के रूप में छापना आरंभ किया तथा तिलक के विचारों को हिंदी भाषा-भाषी जनता में प्रचारित करने का पुण्य कार्य किया। हिंदी साहित्यकारों एवं

लेखकों को एक सूत्र में पिरोने के लिए नागपुर से हिंदी ग्रंथमाला भी प्रकाशित की। उन्होंने कर्मवीर के प्रकाशन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। कर्मवार ने हिंदी जगत को पत्रकार के पावन कर्तव्यों से अवगत कराया एवं कर्तव्य पर बलिदान होने की प्रेरणा दी, जिसकी प्रतिध्वनि आज भी कर्मवीर के उद्देश्य के रूप में गूँज रही है–

कर्म है अपना जीवन प्राण, कर्म में बसते हैं भगवान।
कर्म है मातृभूमि का मान, कर्म पर हो जाओ बलिदान।।

उल्लेखनीय है कि सप्रेजी की कहानी 'एक टोकरी भर मिट्टी' को हिंदी की प्रथम कहानी होने का श्रेय प्राप्त है।

उन्होंने मौलिक लेखन के साथ-साथ विख्यात संत समर्थ रामदास के मूलत: मराठी में रचित दासबोध, तिलक रचित गीता रहस्य, चिंतामणि विनायक वैद्य रचित महाभारत मीमांसा आदि का हिंदी में श्रेष्ठ अनुवाद भी किया। उन्होंने 1924 ई. में देहरादून में संपन्न हिंदी साहित्य सम्मेलन की भी अध्यक्षता की थी ।

हिंदी प्रेमी वरिष्ठ पत्रकार लक्ष्मण नारायण गर्दे ने हिंदी में 'भारत मित्र' समाचार के प्रकाशन में योगदान दिया और 'महाराष्ट्र रहस्य' नाम से लेखमाला लिखी। लखनऊ से जब 'नवजीवन' का प्रकाशन शुरू किया गया तो गर्दे जी को उसका प्रथम सम्पादक बनाया गया।

प्रतिवर्ष 10 जनवरी को 'विश्व हिंदी दिवस' मनाया जाता है। वस्तुत: 10 जनवरी, 1975 में नागपुर में प्रथम विश्व हिंदी सम्मेलन आयोजित किया गया था। इस आयोजन में मराठी भाषी पत्रकार अनंत गोपाल शेवडे की महत्वपूर्ण भूमिका रही है।

महाराष्ट्र में कई ऐसी संस्थाएं बनीं, जिन्होंने हिंदी के प्रचार-प्रसार में अविस्मरणीय योगदान किया है। उन संस्थाओं में राष्ट्रभाषा प्रचार समिति वर्धा, महाराष्ट्र राष्ट्रभाषा सभा, पुणे, मुंबई हिंदी विद्यापीठ, महाराष्ट्र हिंदी साहित्य अकादमी, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय वर्धा, भारतीय भाषा प्रतिष्पाठन राष्ट्रीय परिषद् मुंबई आदि प्रमुख हैं।

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की प्रेरणा से राष्ट्रभाषा प्रचार समिति की स्थापना 1936 ई. में की गई । पहले इसका नाम हिंदी प्रचार समिति था। शिमला में संपन्न हिंदी साहित्य सम्मेलन के 27वें अखिल भारतीय अधिवेशन में काका कालेलकर के सुझाव पर हिंदी प्रचार समिति का नाम बदलकर राष्ट्रभाषा प्रचार समिति कर दिया गया। इस समिति का केंद्रीय कार्यालय आरंभ से ही वर्धा में स्थित है।

इस समिति का उद्देश्य दक्षिण भारत के अलावा अन्य हिंदीतर राज्यों में हिंदी का प्रचार-प्रसार तथा राष्ट्रीय भावना का निर्माण करना है। 'एक हृदय हो भारत जननी' समिति का मूलमंत्र रहा है।

इस समिति के सुझाव के आधार पर ही 14 सितंबर को हिंदी दिवस के रूप में मनाया जाता है। इस समिति के सत्प्रयास से ही प्रथम विश्व हिंदी सम्मेलन का नागपुर एवं तृतीय विश्व हिंदी सम्मेलन का नई दिल्ली में आयोजन किया गया।

महाराष्ट्र राष्ट्रभाषा सभा – 1937 ई. में काकासाहब कालेलकर की अध्यक्षता में पुणे में महाराष्ट्र हिंदी प्रचार समिति की स्थापना की गई। आठ वर्षों तक यह समिति राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा से सम्बद्ध रही। बाद में वर्धा समिति से यह संस्था अलग होकर स्वतंत्र रूप से महाराष्ट्र राष्ट्रभाषा सभा के नाम से हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए कार्य करने लगी।

महात्मा गांधी का स्वप्न था कि भारत में हिंदी राष्ट्रभाषा के रूप में प्रतिष्ठित हो। उन्होंने कहा था कि राष्ट्रभाषा के बिना राष्ट्र गूँगा हो जाता है। नागपुर में आयोजित प्रथम विश्व हिंदी सम्मेलन (10-14 जनवरी, 1975) में यह प्रस्ताव पारित किया गया था कि संयुक्त राष्ट्रसंघ में हिंदी को आधिकारिक भाषा के रूप में स्थान दिया जाए तथा एक अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय की स्थापना की जाय जिसका मुख्यालय वर्धा में हो। वर्ष 1997 जब भारत की संसद द्वारा एक अधिनियम

शेष भाग पृष्ठ 32 पर.....

महाराष्ट्र की सांस्कृतिक विरासत

बेल्लोणा मैथ्यू
वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा)
अंचल कार्यालय, बेंगलुरु
जन्म स्थान : केरल
शैक्षिक योग्यता : स्नातकोत्तर (हिंदी) एवं
अनुवाद में डिप्लोमा
विशेष उपलब्धियाँ/रुचि : गायन, अनुवाद कार्य

जब हम इतिहास पर नजर डालते हैं तो हमें पता चलता है कि आज महाराष्ट्र जिस क्षेत्र में खड़ा है वह पुरापाषाण काल से ही बाधित रहा है। अब तक खोजे गए सभी पुरातात्विक साक्ष्य इस क्षेत्र की उत्पत्ति तीसरी शताब्दी ईसा पूर्व के आसपास बताते हैं। महाराष्ट्र की सांस्कृतिक विरासत की समृद्धि राज्य द्वारा देखे गए चार प्रमुख ऐतिहासिक युगों का परिणाम है। आइए समझें कि ये कालखंड क्या थे और उन्होंने इस क्षेत्र की संस्कृति को कैसे प्रभावित किया, मध्य साम्राज्य, 6वीं शताब्दी से शुरू होकर, राष्ट्रकूट और चालुक्यों से, इसके बाद 12वीं शताब्दी में यादव राजवंश आए। मध्यकालीन काल 1206 ई. से 1858 ई. तक, राज्य में बहमनी और दक्कन सल्तनत का उदय हुआ। मराठा साम्राज्य के स्वर्णिम काल में कला, संगीत, साहित्य और अन्य क्षेत्रों में महान विकास हुआ। इस साम्राज्य की स्थापना बहादुर और भारतीय शासक छत्रपति शिवाजी ने की थी। 1760 में पेशवा के शासनकाल में मराठा साम्राज्य फला-फूला और विस्तारित हुआ। ब्रिटिश राज : ब्रिटिश उपनिवेशवाद देश में लगभग दो शताब्दियों तक चला।

भारत में 38 विश्व धरोहर स्थल स्थित हैं। इनमें 30 सांस्कृतिक स्थल, सात प्राकृतिक स्थल और एक मिश्रित-मानदंड स्थल शामिल हैं। भारत विश्व में स्थलों की संख्या के मामले में छठे स्थान पर है और इनमें से 5 विश्व धरोहर स्थल महाराष्ट्र के पास गर्व के साथ हैं।

अजंता की गुफाएँ (विश्व विरासत टैग-1983) दो चरणों में बनी बौद्ध गुफाएँ हैं। पहला, सम्राट अशोक के शासनकाल का था। दूसरा, गुप्त काल की 5वीं और 6ठीं शताब्दी ई. पू. के दौरान इसमें और परिवर्धन किया गया। गुफाएँ बड़े पैमाने पर सजाए गए भित्ति चित्रों को दर्शाती हैं, जो श्रीलंका में सिगिरिया चित्रों और मूर्तियों की याद दिलाती हैं। यहां चट्टानों को काटकर बनाए गए 31 गुफा स्मारक हैं जो बौद्ध धर्म की धार्मिक कला का अद्वितीय प्रतिनिधित्व हैं।

एलोरा गुफाएं (विश्व विरासत टैग-1983), जिसे एलोरा कॉम्प्लेक्स के नाम से भी जाना जाता है, बौद्ध धर्म, हिंदू धर्म और जैन धर्म की धार्मिक कलाओं का एक सांस्कृतिक मिश्रण है। 2 किलोमीटर (1.2 मील) की लंबाई में ऊंची बेसाल्ट चट्टान की चट्टानों की दीवारों में एक साथ गढ़े गए 34 मठ और मंदिर दिखाई देते हैं। 600 से 1000 ईस्वी पूर्व के, वे भारत की प्राचीन सभ्यता की कलात्मक रचना का प्रतिबिंब हैं।

एलीफेंटा गुफाएं (विश्व विरासत टैग-1987) मुंबई हार्बर में एलीफेंटा द्वीप या घरपुरी (शाब्दिक रूप से 'गुफाओं का शहर') पर स्थित मूर्तिकला गुफाओं का एक नेटवर्क है जिसमें गुफाओं के दो समूह शामिल हैं – पहला एक बड़ा समूह है पाँच हिंदू गुफाएँ, दूसरी, दो बौद्ध गुफाओं का एक छोटा समूह।

चाहे वह सिर पर लपेटने वाला कपड़ा हो, पगड़ी हो, या लिपटा हुआ कपड़ा हो–सांस्कृतिक विरासत फैशन है। वेशभूषा किसी क्षेत्र की सांस्कृतिक विरासत की सशक्त प्रतिनिधि होती है। महाराष्ट्र के कारीगर अपने काम में बहुत सटीक और नाजुक होते हैं। कपास और रेशम (औरंगाबाद में प्रसिद्ध) से बने गुणवत्ता वाले कपड़े, मशरू और हिमरू की बुनाई अपनी तरह की बेहतरीन है।

कोल्हापुर की कोल्हापुरी चप्पल अपनी सरल शैली, स्थायित्व, चमड़े की गुणवत्ता और उसके डिजाइन के लिए जानी जाती है। कोल्हापुर साज एक विशेष प्रकार का हार है, जो महाराष्ट्र की महिलाओं के बीच प्रसिद्ध है। पैंठानी साड़ियां जिनका उत्पादन पिछले 2000 वर्षों से हो रहा है, वे बेहतरीन रेशम साड़ियाँ हैं जिनके बॉर्डर पर ज़री की बारीक कारीगरी होती है। साड़ियों की बुनाई के लिए शुद्ध रेशम, ज़री और सोने के धागों का उपयोग किया जाता है। जिससे साड़ी भारी लगती है और साड़ियों को शानदार बनाने में छह महीने से एक साल तक का समय लगता है।

राज्य के ठाणे जिले में रहने वाली वाली वारली जनजातियों द्वारा बनाई गई वारली पेंटिंग दर्शकों को एक कहानी बताती है। पेंटिंग छड़ी-आकृति के आकार की हैं और समझने में आसान हैं। वारली पेंटिंग महाराष्ट्र की लोक चित्रकला है। 'वारली' नाम महाराष्ट्र की राजधानी मुंबई के उत्तरी बाहरी इलाके में पाई जाने वाली सबसे बड़ी जनजाति से प्रेरित है। यह 10वीं शताब्दी ईस्वी पूर्व का माना जाता है।

कला सांस्कृतिक महत्व से परिपूर्ण है। कला समाज की सांस्कृतिक पहचान को संरक्षित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। महाराष्ट्र में नृत्य, संगीत, चित्रकला और वास्तुकला जैसे विभिन्न प्रकार के कला रूप हैं जो सदियों से मौजूद विविध और अद्वितीय सांस्कृतिक परंपराओं को दर्शाते हैं : महाराष्ट्र का हस्तशिल्प उद्योग पारंपरिक शिल्प का एक जीवंत चित्रयवनिका है जो राज्य की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत को दर्शाती है। कुशल कारीगरों द्वारा विकसित उत्कृष्ट तकनीकें स्थानीय संस्कृति और परंपराओं में गहराई से निहित हैं, जो उनकी कलात्मक कौशल और रचनात्मकता को प्रदर्शित करती हैं। बिड्रीवेयर, जस्ता और तांबे के मिश्रण से बने हस्तशिल्प और आमतौर पर चांदी के साथ दिया गया अंतिम स्पर्श बिड्रीवेयर के रूप में जाना जाता है। यह महाराष्ट्र राज्य की कला और शिल्प में औरंगाबाद के लोगों का एक महान योगदान है। बिड्रीवेयर कला का उपयोग पहले पानदान और हुक्का बनाने के लिए किया जाता था।

महाराष्ट्र के लोक संगीत और नृत्य हैं कोली, पोवाड़ा, बंजारा होली नृत्य और लावणी नृत्य। पोवाड़ा नृत्य शैली मराठा शासक शिवाजी महाराज की उपलब्धियों को दर्शाती है। कोली संगीत और नृत्य की उत्पत्ति मनोरंजन के लिए मछुआरा समुदाय से हुई थी। लावणी नृत्य शैली रोमांस, राजनीति, त्रासदी, समाज आदि जैसे कई विषयों को प्रदर्शित करती है। 'लावणी' 'लावण्या' से आया है जिसका अर्थ है 'सुंदर' या 'सौंदर्य'। ज़दिपट्टी का अभ्यास महाराष्ट्र के चावल की खेती वाले क्षेत्र में फसल के मौसम के दौरान किया जाता

है और इसका नाम चावल के स्थानीय नाम ज़दी से लिया गया है। इस क्षेत्र की नाट्य कला को जदीपट्टी रंगभूमि के नाम से जाना जाता है। दशावतार, पारंपरिक लोक नाट्य रूप चामाद्यचा बाहुल्य-छाया कठपुतली और कुंभ मेला कला के अन्य प्रमुख रूप हैं।

संस्कृति और धर्म के बीच पारस्परिक अंतःक्रिया को पहचाना जाना चाहिए, धर्म संस्कृति द्वारा निर्धारित होता है, लेकिन धर्म संस्कृति को भी प्रभावित करता है। इस प्रकार, धर्म और संस्कृति का भाग्य आपस में जुड़ा हुआ है। महाराष्ट्र के लोग अपनी सांस्कृतिक विविधता पर गर्व करते हैं और हर धर्म का सम्मान करते हैं। महाराष्ट्र में लगभग 80 प्रतिशत हिंदू और बड़ी संख्या में मुस्लिम हैं। ईसाई धर्म, बौद्ध धर्म, जैन धर्म, सिख धर्म और अन्य धर्म अल्पसंख्यक हैं। चर्च, मंदिर, मस्जिद और अन्य धार्मिक केंद्र पूरे महाराष्ट्र में पाए जाते हैं। मुंबई शहर का नाम इसके सबसे पुराने मंदिरों में से एक मुंबादेवी मंदिर के नाम पर पड़ा है। यह मंदिर देवी दुर्गा के अवतार देवी मुंबा की पूजा के लिए समर्पित सबसे महान पवित्र स्थानों में से एक माना जाता है।

महाराष्ट्र के फिल्म उद्योग दुनिया भर में इस राज्य तथा पूरे भारत के सांस्कृतिक विरासत को फैलाने में महत्वपूर्ण प्रभाव एवं भूमिका निभाई है। इस विशाल उद्योग की आधारशिला गिरगांव निवासी मराठी माणूस और कला के प्रखर पारखी दादा साहब फाल्के ने रखी थी। फाल्के ने 1913 में भारत की पहली फीचर फिल्म, राजा हरिश्चंद्र बनाई थी। बॉलीवुड, भारतीय फिल्म उद्योग ने भारतीय पर्यटन को बढ़ावा देने और देश की सुंदरता और संस्कृति को दुनिया के सामने प्रदर्शित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

महाराष्ट्र संस्कृति विभिन्न राजवंशों का मिश्रण है। इस क्षेत्र पर विभिन्न साम्राज्यों ने बहुत लंबे समय तक शासन किया। इसके परिणामस्वरूप महाराष्ट्र की संस्कृति और परंपरा का विविध मिश्रण सामने आया है। महाराष्ट्र अपने जीवंत त्योहारों और समारोहों के लिए भी जाना जाता है, जो इसकी संस्कृति का अभिन्न अंग हैं। महाराष्ट्र की वनस्पतियां और जीव-जंतु बहुत समृद्ध हैं। इसकी कई प्रजातियाँ हैं और कई की खोज अभी बाकी है। प्रकृति के सभी तत्व यहां सही संयोजन में मौजूद हैं और यही महाराष्ट्र की इंद्रियों को फिर से जीवंत करने के लिए सही जगह बनाता है। यही कारण है कि महाराष्ट्रीयन सांस्कृतिक विरासत को रहस्य, आश्चर्य और विस्मय का प्रतीक माना जाता है।

अपनी पुरोगामी संस्कृति (आगे की संस्कृति) के लिए जाना जाने वाला महाराष्ट्र वास्तव में अपने आकार, जनसंख्या और संस्कृति में 'महा' है, जिसकी सांस्कृतिक राजधानी पुणे शहर है। यह शहर संगीत, थिएटर, नृत्य जैसी सभी प्रकार की सांस्कृतिक, कला और साहित्य गतिविधियों का केंद्र है। यह राज्य अपनी संस्कृति, पोशाक, भोजन और उत्कृष्ट वास्तुकला के लिए जाना जाता है। भाषा और साहित्य ने महाराष्ट्र की संस्कृति को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इसकी अनूठी विरासत ने इसके आधुनिक प्रभावों के साथ मिलकर, इसे भारत के सबसे जीवंत और रंगीन राज्यों में से एक बना दिया है। जैसा कि इसके नाम से ही पता चलता है महा ('महान') और राष्ट्र ('राष्ट्र') – यह राज्य सचमुच एक महान भूमि है।

इतिहास में महाराष्ट्र

ओंकार राम टाक
वरिष्ठ प्रबंधक
भाटी सर्कल शाखा जोधपुर
जन्म स्थान : जोधपुर
शैक्षिक योग्यता : स्नातक (अंग्रेजी)
विशेष उपलब्धियाँ/रुचि : कहानी लेखन,
कविता संग्रह व पुस्तक संकलन

महाराष्ट्र राज्य का इतिहास बहुत समृद्ध है और प्राचीनकाल में यहाँ पर बहुत से राजवंशों ने शासन किया था। महाराष्ट्र के पहले प्रसिद्ध शासक सातवाहन थे, जो महाराष्ट्र राज्य के संस्थापक थे। ऐतिहासिक पुराणों में मौजूद तथ्यों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि राज्य का अस्तित्व तीसरी सदी से है और यह उद्योग, वाणिज्यिक लेनदेन और व्यापार का केंद्र था। शुरुआत में यहां वक्ताओं का राज था जो बहुत महान लड़ाके थे। उन्होंने राज्य का नाम बदलकर 'दंडकारण्य' रखा, जिसका अर्थ था जंगल पर राज करने वाले राजा। उन्हें बाद में यादवों ने हराया जिन्होंने यहां कुछ साल शासन किया था।

सन् 1296 में अलाउद्दीन खिलजी ने यादवों को हरा अपना साम्राज्य स्थापित किया, वह पहला मुस्लिम शासक था जिसने अपनी विरासत को दक्षिण में मदुरै तक फैला दिया था। अलाउद्दीन खिलजी के बाद महाराष्ट्र ने अन्य मुस्लिम शासकों मोहम्मद बिन तुगलक और बीजापुर के बहमनी सुल्तानों ने अपना साम्राज्य स्थापित किया। उसके बाद सन् 1680 में शिवाजी के नेतृत्व में मराठा आए और उन्होंने मुगलों के खिलाफ संघर्ष किया और महाराष्ट्र के राजा बने। बाद में पेशवा राजवंश ने महाराष्ट्र पर अपना अधिपत्य स्थापित किया, उन्होंने अंग्रेजों के साथ कई वर्षों तक युद्ध किया और अंत में उन्हें हार का सामना करना पड़ा। 1857 के स्वतंत्रता संग्राम में कई मराठी नेता थे, हालांकि लड़ाई मुख्य रूप से उत्तरी भारत में हुई थी। स्वतंत्रता के लिए आधुनिक संघर्ष 1800 के दशक के अंत में बाल गंगाधर तिलक जैसे नेताओं के साथ आकार लेना शुरू हुआ, न्यायमूर्ति महादेव गोविंद रानाडे, गोपाल कृष्ण गोखले, फिरोजशाह मेहता और दादाभाई नौरोजी ने कंपनी के नियम और उसके परिणामों का मूल्यांकन किया। ज्योतिराव फुले 19वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में महाराष्ट्र क्षेत्र में सामाजिक सुधार के अग्रदूत थे। 01 मई 1960 में

बंबई पुनर्गठन अधिनियम के तहत कोंकण, मराठवाड़ा, पश्चिमी महाराष्ट्र, दक्षिण महाराष्ट्र, उत्तर महाराष्ट्र (खानदेश) तथा संभागों को एकजुट करके भारत सरकार द्वारा आधिकारिक रूप से महाराष्ट्र राज्य की स्थापना की गई।

भारत का पहला परमाणु बिजली घर तारापुर महाराष्ट्र मे स्थित है। छत्रपति शिवाजी की कर्म भूमि महाराष्ट्र को भारत का सबसे महत्वपूर्ण राज्य माना जाता है। आबादी के आधार पर यह राज्य देश का दूसरा सबसे बड़ा राज्य है और क्षेत्रफल के आधार पर तीसरा सबसे बड़ा राज्य है। महाराष्ट्र भारतीय फिल्म और टेलीविजन उद्योग का प्रमुख केंद्र है।

महाराष्ट्र और विशेष रूप से मुंबई भारतीय मनोरंजन उद्योग के लिए एक प्रमुख स्थान है, जहां कई फिल्में, टेलीविजन शृंखला, किताबें और अन्य मीडिया सेट हैं। मुंबई फिल्म और टेलीविजन निर्माण का सबसे बड़ा केंद्र है और सभी भारतीय फिल्मों का एक तिहाई उत्पादन इसी राज्य में होता है। 1.5 बिलियन (US$19 मिलियन) तक की सबसे महंगी लागत वाली मल्टी मिलियन-डॉलर की बॉलीवुड प्रस्तुतियों को वहां फिल्माया गया है। मराठी फिल्में पहले मुख्य रूप से कोल्हापुर में बनाई जाती थीं, लेकिन अब मुंबई में बनाई जाती हैं। राज्य में भारतीय रिज़र्व बैंक, बॉम्बे स्टॉक एक्सचेंज, नेशनल स्टॉक एक्सचेंज ऑफ़ इंडिया, सेबी और कई भारतीय कंपनियों और बहुराष्ट्रीय निगमों के कॉर्पोरेट मुख्यालय जैसे महत्वपूर्ण वित्तीय संस्थान हैं। यहां भारत के कुछ प्रमुख वैज्ञानिक और परमाणु संस्थानों जैसे BARC, NPCL, IREL, TIFR, AERB, AECI और परमाणु ऊर्जा विभाग का मुख्यालय भी है।

इतिहास में कई प्रसिद्ध फिल्मी हस्तियों के नाम दर्ज हैं। इसका इतिहास उतना ही पुराना है जितना भारतीय सिनेमा का। पहली भारतीय फिल्म, राजा हरिश्चंद्र, एक मराठी व्यक्ति दादासाहब फाल्के द्वारा बनाई गई थी। तब से मराठी फिल्म उद्योग ने मुख्यधारा सिनेमा में लगातार योगदान दिया है और साथ ही साथ मराठी फिल्मों को भी समृद्ध किया है।

शुरुआती वर्षों में वी. शांताराम जैसे उस्ताद थे, मास्टर विनायक, भालजी पेंढारकर, आचार्य अत्रे, राजा परांजपे, जीडी मडगुलकर और सुधीर फड़के ने मराठी सिनेमा का समृद्ध इतिहास बनाने में योगदान दिया। बाद के वर्षों में यही कार्य अनंत माने, दत्ता धर्माधिकारी, राज दत्त, दादा कोंडके और कई अन्य लोगों के कंधों पर आया। जबकि इनमें से कुछ निर्देशकों ने अपनी फिल्मों के माध्यम से मराठी तमाशा शैली को पुनर्जीवित किया और इस प्रकार महाराष्ट्र की मूल संस्कृति को दुनिया के सामने लाया, वहीं अन्य ने हास्य शैली और पारिवारिक नाटकों में मराठी फिल्मों के साथ दर्शकों का मनोरंजन किया। 1980 के दशक में अशोक सराफ और लक्ष्मीकांत बेर्डे जैसी मशहूर हस्तियों का उदय हुआ, जो अपनी कॉमिक टाइमिंग से दर्शकों को गुदगुदाकर स्टारडम तक पहुंचे। इन दोनों अभिनेताओं ने हिंदी फिल्म उद्योग में भी योगदान दिया।

महाराष्ट्र और महाराष्ट्रीयन कलाकार एक सदी से भी अधिक समय से हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत के संरक्षण और विकास में प्रभावशाली रहे हैं। किराना या ग्वालियर शैली के उल्लेखनीय व्यवसायी महाराष्ट्र को अपना घर कहते थे। 1950 के दशक में भीमसेन जोशी द्वारा पुणे में शुरू किया गया सवाई गंधर्व भीमसेन महोत्सव भारत में सबसे प्रतिष्ठित हिंदुस्तानी संगीत समारोह माना जाता है।

कोल्हापुर और पुणे जैसे शहर भावगीत और नाट्य संगीत जैसे संगीत के संरक्षण में प्रमुख भूमिका निभा रहे हैं, जो भारतीय शास्त्रीय संगीत से विरासत में मिले हैं। भारतीय लोकप्रिय संगीत का सबसे बड़ा रूप मुंबई में निर्मित फिल्मों के गाने हैं। अधिकांश प्रभावशाली संगीतकारों और गायकों ने मुंबई को अपना घर कहा है। महाराष्ट्र में लोक संगीत की एक लंबी और समृद्ध परंपरा है। व्यवहार में लोक संगीत के कुछ सबसे सामान्य रूप हैं भजन, भारूद, कीर्तन, गोंधल और

कोली गीत।

महाराष्ट्र में आधुनिक रंगमंच की उत्पत्ति 19वीं शताब्दी के मध्य में ब्रिटिश औपनिवेशिक युग में मानी जाती है। यह मुख्य रूप से पश्चिमी परंपरा पर आधारित है, लेकिन इसमें संगीत नाटक जैसे रूप भी शामिल हैं। हाल के दशकों में, मराठी तमाशा को कुछ प्रयोगात्मक नाटकों में भी शामिल किया गया है। मराठी रंगमंच का भंडार हास्य सामाजिक नाटक, प्रहसन, ऐतिहासिक नाटक और संगीत से लेकर प्रयोगात्मक नाटक और गंभीर नाटक तक है। मराठी नाटककार जैसे विजय तेंदुलकर, पीएल देशपांडे, महेश एलकुंचवार, रत्नाकर मटकरी और सतीश अलेकर पूरे भारत में रंगमंच को प्रभावित किया है। मराठी थिएटर के अलावा, महाराष्ट्र और विशेष रूप से मुंबई में गुजराती, हिंदी और अंग्रेजी जैसी अन्य भाषाओं में थिएटर की एक लंबी परंपरा रही है।

इस तरह महाराष्ट्र राज्य का भारत के इतिहास में बहुत महत्वपूर्ण स्थान है। हर क्षेत्र में महाराष्ट्र ने राष्ट्र की सांस्कृतिक विरासत को समृद्ध करने में अभूतपूर्व योगदान दिया है।

पृष्ठ 10 का शेष भाग

पुणे शहर में पेठ के नाम से जाने जानेवाले कुल 17 इलाके हैं। पेठ मुख्य रूप से मराठों और पेशवाओं के राज के दौरान बनाए गए थे। उनमें से 7 पेठ के नाम सप्ताह के दिनों पर रखे गए हैं। अन्य पेठों का नाम पेशवाओं के समय के शासकों या प्रसिद्ध हस्तियों के नाम पर रखा गया है। एक पेठ पानीपत युद्ध के नायक 'सदाशिवराव भाउ' की याद में 'सदाशिव पेठ' कहलाता है तो दूसरा पेठ 'नाना फडणवीस' की स्मृति में नाना पेठ कहलाता है। कहने की आवश्यकता नहीं कि गणेश पेठ का नाम नाम भगवान गणेश से प्रेरित है।

इस प्रकार महाराष्ट्र का एक प्रमुख नगर पुणे जो शिवाजी तथा उनके पुत्र एवं उत्तराधिकारी शम्भाजी (शुम्भजी) के द्वारा बसाया गया था। भारत के इतिहास के अनेक गौरवमय अध्यायों में सोने के अक्षर से लिखा गया एक वृत्तांत है। इसे 'क्वीन ऑफ़ द डेक्कन' के नाम से भी जाना जाता है। इसने इतिहास के हर कालखंड की चुनौतियों को स्वीकार किया है तथा समय के साथ अपना तालमेल बनाए रखा है। वर्तमान समय में पुणे सूचना तकनीकी, औषधि उद्योग, प्रतिरक्षा तथा शोध संस्थानों के लिए जाना जाता है।

न जाने कब से मनुष्य के अंतरतर से 'दीन रट' निकलती रही – मैं अंधकार से घिर गया हूं, मुझे प्रकाश की ओर ले चलो, तमसो मा ज्योतिर्गमय। परंतु यह पुकार शायद सुनी नहीं गई – होत न श्याम सहाय! प्रकाश और अंधकार की आंख मिचौली चलती ही रही, चलती ही रहेगी। यह तो विधि का विधान है। कौन टाल सकता है इसे। किस दिन एक शुभ मुहूर्त में मनुष्य ने मिट्टी के दिए, रूई की बाती, चमक की चिंगारी और बीजों से निकलने वाले स्रोत का संयोग देखा। अंधकार को जीता जा सकता है, दिया जलाया जा सकता है। घने अंधकार में डूबी धरती को आंशिक रूप से आलोकित किया जा सकता है। अंधकार से जूझने के संकल्प की जीत हुई। तब से मनुष्य ने इस दिशा में बड़ी प्रगति की है, पर वह आदम प्रयास क्या भूलने की चीज है? वह मनुष्य की दीर्घकालीन कातर प्रार्थना का उज्ज्वल फल था।

हजारी प्रसाद द्विवेदी

'अंधकार से जूझना है' निबंध से

समाज सुधार और पुनर्जागरण का केन्द्र महाराष्ट्र

डॉ. शिल्पी शुक्ला
वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा)
अंचल कार्यालय, लखनऊ
जन्म स्थान : लखनऊ
शैक्षिक योग्यता : एम ए, पी एच डी, बी एड
विशेष उपलब्धियाँ/रुचि : काव्य संग्रह
'जिंदगी इतनी आसान नहीं' प्रकाशित
आगमन साहित्यिक संस्था द्वारा 2021 में सम्मानित

महाराज शिवाजी के शौर्य से सिंचित महाराष्ट्र की पावन भूमि सदा ही स्तुत्य रही है। इस भूमि ने हमेशा से ही प्रतिमान स्थापित किए हैं। बंधी-बंधाई परिपाटी को तोड़कर निरंतर आगे की ओर बढ़ने की प्रवृत्ति रखने वाले महाराष्ट्र में हमें ऐसे अनेक उदाहरण देखने को मिल जाते हैं जिन्होंने महाराष्ट्र सहित संपूर्ण भारतवर्ष में फैली कुप्रथाओं के विरुद्ध आवाज बुलंद कर भारतीय पुनर्जागरण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। महाराष्ट्र समाज सुधार एवं पुनर्जागरण के केन्द्र के रूप में अपनी अलग पहचान रखता है। हम सभी जानते हैं कि हमारे समाज में अनेक कुप्रथाएं विद्यमान थीं, जिनके कारण हमारे समाज की निचली जातियों और महिलाओं का जीवन निरंतर कष्टपूर्ण होता जा रहा था। इस सबसे मुक्ति दिलाने के लिए अनेक समाज सुधारकों न अपना सक्रिय योगदान दिया।

महाराष्ट्र में समाज सुधार एवं पुनर्जागरण के बीज भक्ति आंदोलन के समय ही दिखाई देने लगते हैं। जहां विभिन्न संतों ने सामाजिक समानता और मानवतावाद की बात की। इससे निचली जातियों में अपने अधिकारों के प्रति सजगता पैदा हुई। वे सामाजिक न्याय और समाज में अपने समान अधिकार के बारे में सोचने और आवाज उठाने लगे। महिलाओं की स्थिति हमारे समाज में दोयम दर्जे की थी। सदियों से चली आती हुई कुप्रथाओं जैसे कि सती प्रथा, बाल विवाह, अशिक्षा के कारण उनकी स्थिति समय के साथ बद से बदतर होती जा रही थी। महाराष्ट्र और दक्षिण भारत में जाति प्रथा तथा धर्मिक व सामाजिक मान्यताएं उत्तरी क्षेत्र से अपेक्षाकृत अधिक कठोर थी। अतः इस स्थिति के विरुद्ध यहां से आवाज उठना स्वाभाविक ही थी।

18वीं शताब्दी में भारत पर पाश्चात्य जगत के विचारों का प्रभाव पड़ना प्रारंभ हो चुका था। अंग्रेजों के भारत आने एवं अंग्रेजी शिक्षा के विस्तार के कारण भारतीयों ने पाश्चात्य विचारकों के

विचारों को जाना। पाश्चात्य दर्शन, साहित्य, विज्ञान एवं संस्कृति के अध्ययन से भारतीयों का न केवल ज्ञान व्यापक हुआ अपितु उनका दृष्किोण भी विस्तृत हुआ। बरसों से चली आ रही कुरीतियों को समाज से दूर कर भारत के नवनिर्माण की सोच ने जब मूर्तरूप लिया तो भारतीय समाज की तस्वीर ही बदल गई।

पराधीन भारत में अंग्रेजों की 'फूट डालो राज करो' की नीति के कारण भारतीय समाज में विभिन्न जातियों के बीच खाई निरंतर बढ़ती जा रही थी। अंग्रेजों ने जानबूझकर क्षेत्रों, जातियों, उपजातियों, धर्मों, नस्लों आदि के अंतर के आधार पर भारतीयों को विभाजित करने की नीति अपनाई। 1901ई. से अंग्रेजों ने जातियों और उपजातियों पर आधारित जनगणना शुरू की। इससे सामाजिक विभाजन बहुत बढ़ गया था और इसने बड़े पैमाने पर सामाजिक आंदोलनों के पनपने की आधारभूमि तैयार कर दी। परिणामस्वरूप, कई व्यक्तियों और आंदोलनों ने समाज में सुधार और पुनरुत्थान की दृष्टि से सामाजिक और धार्मिक प्रथाओं में बदलाव लाने की मांग की।

19वीं शताब्दी के अंत तक आते-आते महाराष्ट्र में अनेक समाज सुधारकों के अथक प्रयासों से सदियों से शोषित और प्रताड़ित जनता को एक नवीन दिशा दिखाई देती है। जिसे अपनाकर भारतीय समाज पुरातनपंथी आडम्बरपूर्ण जीवन से स्वतंत्र होता है।

महाराष्ट्र समाज सुधार और पुनर्जागरण के संदर्भ में पूरे देश की अगुवाई करता नजर आता है। यहां समाज सुधारकों का उल्लेख करना आवश्यक हो जाता है। महाराष्ट्र में ऐसे अनेक समाज सुधारक हुए हैं जिन्होंने समाज में प्रचलित विभिन्न कुरीतियों को चुनौती देकर एक समरस समाज की स्थापना की ओर कदम बढ़ाया। महाराष्ट्र में ही विधवा पुनर्विवाह, महिला एवं निचली जातियों की शिक्षा, कर्मकाण्डों का विरोध, दलितों एवं शोषितों के अधिकारों की न केवल बात की गई अपितु इस दिशा में ठोस कदम भी उठाए गए।

स्वामी दयानंद सरस्वती ने 1875 ई. में बंबई में आर्य समाज की स्थापना की। आर्य समाज ने रूढ़ियों में जकड़े समाज को मुक्त करने का कार्य किया। स्वामी दयानंद सरस्वती ने मूर्ति पूजा, कर्मकाण्ड तथा बलि प्रथा, बाल विवाह, बहुविवाह, पर्दा प्रथा, जाति प्रथा, सती प्रथा का विरोध किया। अंधविश्वासों एवं रूढ़ियों के विरूद्ध दयानंद सरस्वती ने भारतीय जनमानस को तार्किक रूप से जाग्रत किया। स्त्रियों की दशा सुधारने में भी आर्य समाज का विशिष्ट योगदान है। इसके द्वारा देश के विभिन्न भागों में विद्यालयों तथा महाविद्यालयों की स्थापना की गई। अनेक कन्या विद्यालय भी स्थापित किए गए। विधवा पुनर्विवाह को भी आर्य समाज ने प्रोत्साहन दिया।

महादेव गोविंद रानाडे एवं एन.जी. चंद्रवरकर ने प्रार्थना समाज की स्थापना की। प्रार्थना समाज ने एकेश्वरवाद का प्रचार किया और पुरोहित वर्चस्व और जाति भेद की निंदा की। इसके द्वारा जातिप्रथा का विरोध किया गया।

18वीं शताब्दी में महिलाओं का पढ़ना पाप समझा जाता था। महिलाओं की शिक्षा के लिए स्कूल एवं कॉलेज की व्यवस्था नहीं थी। महिलाओं की स्थिति सुधारने में महाराष्ट्र के मनीषियों का उल्लेखनीय योगदान रहा है। इस संदर्भ में सावित्रीबाई फुले का योगदान स्तुत्य है। सावित्रीबाई फुले भारत की प्रथम महिला शिक्षिका हैं। इन्हें भारत के नारी मुक्ति आंदोलन की अग्रदूत भी माना जाता है। उनका विवाह छोटी आयु में ही हो गया था और वे अशिक्षित थीं। पढ़ने के प्रति उनकी लगन को देखते हुए उनके पति श्री ज्योतिबा फुले ने उन्हें पढ़ाया। इसके लिए उन्हें समाज का पुरजोर विरोध भी सहना पड़ा परंतु फिर भी उन्होंने अपना काम जारी रखा। 1848 ई. में पुणे में सावित्रीबाई फुले ने अपने पति ज्योतिबा फुले के साथ मिलकर महिला विद्यालय की स्थापना की। जिसके कारण उन्हें समाज का बहुत विरोध और यातनाएं

सहनी पड़ीं परंतु तमाम विरोध के बावजूद उन्होंने महिलाओं को शिक्षित करना जारी रखा।

शिक्षा, महिला अधिकार, जाति सुधार और राजनीतिक चिंतन के क्षेत्रों में गोपाल हरिदेशमुख के योगदान का चिरस्थायी प्रभाव पड़ा। उन्हें लोकहितवादी के नाम से जाना गया। भारतीय पुनर्जागरण के क्षेत्र में लोकहितवादी द्वारा किए गए कार्य मील का पत्थर साबित हुए। उन्होंने अपने लेखों के माध्यम से स्वशासन की आवश्यकता लोगों को समझाई और जनमानस को स्वतंत्र भारत का स्वप्न देखने को प्रेरित किया। 'लोकहितवाड़ी' के सम्पादक के रूप में उन्होंने जनमत और अपने समय के सुधार आंदोलनों को प्रभावित किया। लोकहितवादी ने कहा कि 'यदि धर्म सामाजिक सुधार की अनुमति नहीं देता है तो उसे बदल देना चाहिए। कारण कि धर्म को मनुष्य ने ही बनाया है और बहुत पहले लिखा गया धर्मग्रंथ हो सकता है कि बाद के काल के लिए प्रासंगिक न रह जाएं।' यह कहा जा सकता है कि समाज की एक बंधे-बंधाए खांचे में कैद तस्वीर उन्हें ग्राह्य नहीं थी।

पंडिता रमाबाई ने भी महिला शिक्षा और आधुनिक समाज में नारी की भूमिका को सुदृढ़ किया उन्होंने केवल महिलाओं को शिक्षित करने की ही बात नहीं की अपितु मेडिकल और इंजीनियरिंग के क्षेत्र में भी महिलाओं की भागीदारी को जरूरी बताया। इस संदर्भ में उनके द्वारा दिए गए सुझावों को लार्ड डफरिन के कार्यकाल में माना गया तथा उनकी समाज सेवा के लिए उन्हें कैसर-ए-हिंद की उपाधि भी दी गई।

महाराष्ट्र में अनेक महापुरुषों ने समाज सुधार और पुनजार्गरण में अहम भूमिका निभाई गोपाल गणेश अगरकर ने समाज सुधार में अपना जीवन समर्पित कर दिया। घोडो केशव कर्वे ने महिला शिक्षा के क्षेत्र में महत्वपूर्ण कार्य किया। बहराम जी मलबारी ने 'सेवा सदन' की स्थापना सभी जातियों की महिलाओं के उत्थान के लिए की। कोल्हापुर में छत्रपति साहूजी महाराज ने जाति व्यवस्था ओर अस्पृश्यता को दूर करने के लिए जनता को जागरूक किया।

बाबा साहेब भीमराव अंबेडकर का नाम केवल महाराष्ट्र ही नहीं अपितु पूरे भारत वर्ष में उनके द्वारा किए गए कार्यों के लिए हमेशा याद किया जाता रहेगा। उनके द्वारा दलित और महिला उत्थान की दिशा में किए गए कार्यों के कारण वे विश्व विख्यात हैं। भारतीय संविधान निर्माता अंबेडकरजी ने दलितवर्ग में सामाजिक-राजनीतिक चेतना जाग्रत की।

महाराष्ट्र में ऊंची जातियों, विशेष रूप से ब्राह्मणों द्वारा निम्न जातियों के सामाजिक, धार्मिक एवं आर्थिक शोषण के विरुद्ध समाज सुधारकों ने आवाज उठाई तथा इसमें स्वशासन की मांग भी बलवती होती गई। डॉ. शिवाजी पटवर्धन और बाबा आम्टे ने समाज सुधार की दिशा में कुष्ठरोगियों के पुनर्वास और चिकित्सा के लिए जो कार्य किए हैं वे उनके मानवतावादी दृष्टिकोण के परिचायक हैं। महात्मा गांधी के अनुयायी विनोबा भावे ने अपना पूरा जीवन 'सर्वोदय' के लिए समर्पित कर दिया।

अपने कार्यों से सदियों से शोषित और त्याज्य समझे जाने वाले लोगों के जीवन में महाराष्ट्र के समाज सेवकों ने उजाला भर दिया। उनके यह कार्य भारतीय पुनर्जागरण के संदर्भ में सदैव ही स्मरण किए जाते रहेंगे।

लोकमान्य तिलक और गीता रहस्य

प्रवीण कुमार शर्मा
वरिष्ठ प्रबंधक
अंचल कार्यालय, जोरहाट
जन्म स्थान : कटिहार, बिहार
शैक्षिक योग्यता : मास्टर ऑफ साइंस (प्राणीशास्त्र)
सी. ए. आई. आई. बी.
विशेष उपलब्धियाँ/रुचि : हिंदी और अंग्रेजी में
7 पुस्तकें प्रकाशित

बाल गंगाधर तिलक (23 जुलाई 1856 - 1 अगस्त 1920) का स्मारकीय कार्य 'गीता रहस्य' जो कि माण्डले कारावास (प्राचीन बर्मा) के दौरान सन् 1915 में लिखी गई, उनकी बौद्धिक क्षमता और भारतीय संस्कृति और आध्यात्मिकता की गहरी समझ का एक शानदार उदाहरण है। चार सौ से भी अधिक पृष्ठों में भगवद गीता की अपनी व्याख्या के माध्यम से, तिलक जी ने हिंदू दर्शन के वास्तविक सार और आधुनिक दुनिया में इसकी प्रासंगिकता का खुलासा किया। कर्म, धर्म और मोक्ष की प्रकृति के बारे में उनकी अंतर्दृष्टि दुनिया भर में लाखों हिंदुओं का मार्गदर्शन और प्रेरणा देती रहती है। मूल रूप से मराठी में लिखी गयी इस पुस्तक को कर्मयोग शास्त्र के रूप में भी जाना जाता है। यह पुस्तक हमें हमारे विश्वासों के मूल में मौजूद कालातीत ज्ञान और गहन आध्यात्मिक सच्चाइयों की याद दिलाती है। इस पुस्तक का बंगला, गुजराती और कन्नड़ भाषा में अनुवाद क्रमशः ज्योतिरइन्द्रनाथ टैगोर, उत्तम लाल त्रिवेदी और अलुरु वेंकटा राव द्वारा किया गया। तिलक जी की विरासत हमें याद दिलाती है कि हमारे जीवन के मार्ग में चाहे कितनी भी बाधाएँ क्यों न आ जायें, हमें डटकर उसका सामना करना चाहिए और हमेशा शक्ति हासिल करने की क्षमता विकसित करनी चाहिए।

तिलक जी का 'गीता रहस्य' एक असाधारण कार्य है जो पाठकों को जीवन के आध्यात्मिक आयामों का पता लगाने के लिए प्रेरित करता है। यह पुस्तक एक प्रकाश स्तंभ के रूप में कार्य करती है, जो आत्म-प्राप्ति की दिशा में मार्ग को रोशन करती है। यह पुस्तक मानो हमें अस्तित्व के रहस्यों की गहराई में जाने के लिए आमंत्रित करती है। इसकी शिक्षाएँ हमें अपने वास्तविक स्वरूप की गहन समझ विकसित करने के लिए प्रोत्साहित करती है और हमें जागरूकता और समता के साथ जीवन की चुनौतियों का सामना करने के लिए तैयार करती है।

'गीता रहस्य' पढ़ना एक समृद्ध अनुभव है जो हमें जीवन की सुंदरता और प्रचुरता की याद दिलाती है। यह हमें उद्देश्य के साथ जीने, सत्य की तलाश करने और अपने आंतरिक स्व के साथ गहरा संबंध विकसित करने के लिए प्रेरित करता है। यह पुस्तक हमें आत्म-खोज की यात्रा पर निकलने के लिए प्रेरित करती है, और हमें याद दिलाती है कि हम सभी के पास अपनी उच्चतम क्षमता को जगाने की शक्ति है। इसकी शिक्षाएँ हमें जीवन के उतार-चढ़ाव को शालीनता और साहस के साथ पार करने के लिए मार्गदर्शित करती है। यह हमें हर पल में छुपे अर्थ और उद्देश्य को उजागर करने के लिए एक रोडमैप भी प्रदान करती है।

'गीता रहस्य' एक प्रेरक कृति है जो हमें अपने रोजमर्रा के कार्यों में शक्ति और उद्देश्य ढूंढना सिखाती है। यह हमें याद दिलाती है कि हम केवल व्यक्ति नहीं हैं, बल्कि एक बड़े समुदाय का हिस्सा हैं और हमारे कार्यों के दूरगामी परिणाम होते हैं। कर्म योग की अवधारणा को अपनाकर, हम निस्वार्थता और समर्पण के साथ कार्य करना सीख सकते हैं और अपने आसपास की दुनिया पर सकारात्मक प्रभाव डाल सकते हैं।

तिलक जी की भगवद गीता की व्याख्या एक शक्तिशाली अनुस्मारक है कि हम सभी महान चीजें करने में सक्षम हैं और हमारे कार्य दुनिया में बदलाव ला सकते हैं। अपने जीवन की जिम्मेदारी लेकर और उत्साह के साथ अपने कर्तव्यों को अपनाकर हम परिवर्तन के सच्चे अभिकारक (एजेंट) बन सकते हैं। आज हम ऐसी दुनिया में है जहाँ हम अक्सर तनाव और भारी अनिश्चितता को महसूस कर रहे है, लेकिन गीता रहस्य की शिक्षाएं हमें अपने जीवन में अर्थ और उद्देश्य खोजने में सही मार्गदर्शन करती हैं। यह हमारे आसपास की दुनिया पर भी सकारात्मक प्रभाव डालने के लिए कई रहस्यों से हमें अवगत कराती है।

भगवद गीता की तिलक जी की व्याख्या केवल सतही ज्ञान नहीं है बल्कि भगवद गीता में समाहित रहस्यों का सटीक अनावरण है। वे भगवद गीता के रूपक और प्रतीकवाद की गहरी परतों में कुशलतापूर्वक उतरकर हमारे सामने गीता के सार को प्रस्तुत करते हैं। भगवद गीता के जटिल रूप से बुने हुए छंदों में छिपे हुए सत्य को उजागर करने में तिलक जी को काफी सफलता मिली है। उन्होंने प्रत्येक छंद का विश्लेषण काफी सावधानीपूर्वक और गहरे ध्यान के साथ किया है और उसके बहुआयामी अर्थों और जटिलताओं को सफलतापूर्वक उजागर किया है। ऐसा करते हुए उन्होंने सहजता से गीता में निहित प्राचीन ज्ञान को उन समसामयिक चुनौतियों से जोड़ दिया जिनका सामना उनके युग के दौरान समाज को करना पड़ा था।

तिलक जी की विश्लेषण पद्धति उस कुशल कलाकार के समान है जो किसी उत्कृष्ट कृति के अंतर्निहित रंगों और बनावट को प्रकट करने के लिए पेंट की परतों को सावधानीपूर्वक हटा देते है। इसी तरह वे गीता की शिक्षाओं के अंतर्निहित महत्व को उजागर करते हैं, उन्हें ऐतिहासिक घटनाओं, पौराणिक आख्यानों और वैदिक दर्शन के गहन सिद्धांतों से जोड़ते हैं। इन संबंधों को स्थापित करके उन्होंने छंदों में जान फूंक दी और उन्हें अपने समय के लोगों के लिए अधिक सुलभ और प्रासंगिक बना दिया।

संक्षेप में, तिलक की व्याख्या पद्धति उनकी बौद्धिक गहराई और उनके दृष्टिकोण की व्यापकता का प्रमाण है। उन्होंने सिर्फ गीता के श्लोकों का अर्थ नहीं बताया है; बल्कि उन्होंने अपने समय की सांस्कृतिक, सामाजिक और राजनीतिक गतिशीलता के साथ उन सभी श्लोकों को प्रतिध्वनित किया है। इस तरह गीता का रहस्य उजागर होता है। उन्होंने प्राचीन ज्ञान और समकालीन चुनौतियों के बीच गहरे संबंध की आधारशिला के रूप में गीता के ज्ञान को खड़ा किया था, जो भगवद गीता पर तिलक जी के व्यावहारिक विश्लेषण की स्थायी प्रासंगिकता पर जोर देता है।

'गीता रहस्य' सिर्फ एक किताब से कहीं अधिक है– यह क्रांति का आह्वान है। तिलक जी का संदेश हमें याद दिलाता है कि हमारे पास ज्ञान और तर्क की खोज के माध्यम से खुद को और अपने आसपास की दुनिया को बदलने की शक्ति है। उनका मानना था कि सच्चा ज्ञान प्रश्न पूछने और समझने की कोशिश से आता है और बेहतर समाज के निर्माण के लिए यह प्रक्रिया आवश्यक है। इसलिए यदि आप फँसे हुए या निराश महसूस कर रहे हैं, तो हिम्मत रखें – उत्तर वहाँ मौजूद है और आप उन्हें उजागर करने की प्रतीक्षा कर रहे हैं।

यह पुस्तक एक अनुस्मारक है कि हम सभी महानता के लिए सक्षम हैं, बशर्ते हम इसे आगे बढ़ाने का चयन करें। गीता के अध्ययन के माध्यम से, हम ज्ञान और प्रेरणा के स्रोत का लाभ उठा सकते हैं जो आत्म-खोज की दिशा में हमारी यात्रा में हमारी मदद कर सकता है। तो आइए हम ज्ञान प्राप्त करने की चुनौती को स्वीकार करें और हमें यह कभी नहीं भूलना चाहिए कि सत्य की खोज एक महान और सार्थक प्रयास है। हम सब मिलकर अपने लिए और आने वाली पीढ़ियों के लिए एक उज्ज्वल भविष्य का निर्माण कर सकते हैं।

'गीता रहस्य' में, तिलक की भगवद गीता की व्याख्या केवल ऐतिहासिक संदर्भ प्रदान करने तक सीमित नहीं है। बल्कि, वह एक पीढ़ी को उत्पीड़न और अन्याय के खिलाफ उठने के लिए प्रेरित करता है। इसके पाठ करने से कालातीत ज्ञान का हम अपने जीवन में उपयोग करने में सक्षम हो जाते हैं। उनके विचार में, गीता प्रत्येक व्यक्ति को साहस और दृढ़ विश्वास के साथ अपने कर्तव्य को पूरा करने और जो सही है उसके लिए लड़ने का आह्वान है।

तिलक जी का संदेश आज भी उतना ही प्रासंगिक है जितना एक सदी पहले था। ऐसी दुनिया में जहां असमानता, असहिष्णुता और संघर्ष अभी भी प्रचुर मात्रा में है, उनके शब्द एक अनुस्मारक के रूप में कार्य करते हैं। हमें अन्याय के खिलाफ बोलने, जिस चीज में हम विश्वास करते हैं उसके लिए खड़े होने और एक बेहतर दुनिया बनाने के लिए कार्रवाई करने से नहीं डरना चाहिए। तिलक जी की व्याख्या के माध्यम से गीता हमें सिखाती है कि हमारे कार्य, चाहे वे कितने भी छोटे क्यों न लगें, एक लहरदार (रीप्पल) प्रभाव डाल सकते हैं जो इतिहास की दिशा बदल सकता है। तो आइए हम इस शाश्वत पाठ से प्रेरणा लें और वह बदलाव लाने का प्रयास करें जो हम दुनिया में देखना चाहते हैं।

बाल गंगाधर तिलक की 'गीता रहस्य' एक उत्कृष्ट कृति है जो समय की कसौटी पर खरी उतरी है। अपने प्रकाशन के एक शताब्दी बाद भी, यह दुनिया भर के पाठकों को प्रेरित और प्रबुद्ध करती रहती है। तिलक जी भगवद गीता के आध्यात्मिक सार की गहराई में जुनून और अटूट विश्वास के साथ उतरकर, इसके रहस्यों को बड़ी अंतर्दृष्टि और स्पष्टता के साथ उजागर करते हैं। उनका काम न केवल गीता की शिक्षाओं पर प्रकाश डालता है बल्कि हमें उद्देश्य, सदाचार और साहस का जीवन जीने के लिए भी प्रेरित करता है।

आध्यात्मिक और व्यावहारिकता के बीच की खाई को पाटने की तिलक की क्षमता वास्तव में उल्लेखनीय है। उनका काम न केवल आध्यात्मिक मार्गदर्शन चाहने वालों के साथ, बल्कि दुनिया में सकारात्मक बदलाव लाने के इच्छुक लोगों के साथ भी मेल खाता है। उनकी शिक्षाएँ हमें उस चीज के लिए खड़े होने के लिए प्रोत्साहित करती हैं जिस पर हम विश्वास करते हैं। वे हमें हमेशा न्याय और सच्चाई के लिए अटूट दृढ़ संकल्प के साथ लड़ने के लिए और विपरीत परिस्थितियों में कभी हार न मानने के लिए प्रेरित करते हैं। गीता रहस्य सिर्फ एक किताब नहीं बल्कि प्रेरणा का स्रोत है जो हमारे जीवन को बदलने और मानव आत्मा को ऊपर उठाने की शक्ति रखती है।

महाराष्ट्र के गौरव

अमित कुमार सरवर
वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा)
अंचल कार्यालय, रायपुर
जन्म स्थान : हरसुद, जिला खंडवा
शैक्षिक योग्यता : एम. कॉम और एम. ए.
विशेष उपलब्धियाँ/रुचि :
इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ बैंकिग एंड फाइनेंस
द्वारा आयोजित जेएआईआईबी परीक्षा उतीर्ण

भारत में सबसे अमीर राज्य महाराष्ट्र का समग्र भारत के विकास में बहुत बड़ा योगदान है। भारत का तीसरा सबसे बड़ा राज्य होने के अलावा, महाराष्ट्र भारत के सबसे प्रगतिशील राज्यों में से एक है। यहां कई महान शख्सियतों का जन्म हुआ, जिन्होंने राज्य के साथ-साथ राष्ट्र को भी अपने अच्छे कार्यों से गौरवान्वित किया। आइए एक नजर डालते हैं महाराष्ट्र की मशहूर हस्तियों पर, जिन्होंने अपने उल्लेखनीय कार्यों से राष्ट्र और महाराष्ट्र को गौरवान्वित किया है।

भास्कराचार्य II

भास्कराचार्य II (1114 - 1185), जिन्हें भास्कराचार्य के नाम से भी जाना जाता है, एक भारतीय गणितज्ञ और खगोलशास्त्री थे। उनके मुख्य कार्य सिद्धांत शिरोमणि के छंदों से यह अनुमान लगाया जा सकता है कि उनका जन्म 1114 में विज्जदाविदा (विज्जलविदा) में हुआ था और पश्चिमी घाट की सह्याद्री पर्वत शृंखला में रहते थे, जिसे वर्तमान में स्थित चालीसगाँव में पाटन शहर माना जाता वह एकमात्र प्राचीन गणितज्ञ हैं जिन्हें स्मारक पर अमर किया गया है। माना जाता है कि महाराष्ट्र के एक मंदिर में उनके पोते चांगदेव द्वारा बनाया गया एक शिलालेख है, जो भास्कराचार्य के पैतृक वंश को उनके कई पीढ़ियों के साथ-साथ उनके बाद की दो पीढ़ियों को सूचीबद्ध करता है। कोलब्रूक (Colebrooke) जो अनुवाद करने वाला पहला यूरोपीय था, भास्कराचार्य द्वितीय के गणितीय क्लासिक्स परिवार को गोदावरी के तट पर रहने वाले महाराष्ट्रीयन ब्राह्मणों के रूप में संदर्भित करता है।

छत्रपति शिवाजी महाराज

शिवाजी महाराज सबसे प्रसिद्ध मराठी राजा होने के साथ-साथ अब तक के तीसरे सबसे प्रसिद्ध भारतीय शासक हैं।

शिवाजी शहाजी भोसले (19 फरवरी 1630 - 3 अप्रैल 1680), जिन्हें छत्रपति शिवाजी महाराज के नाम से भी जाना जाता

है, एक भारतीय शासक थे और भोसले मराठा वंश के सदस्य थे। उन्होंने बीजापुर की पतनशील आदिलशाही सल्तनत से अपना स्वतंत्र राज्य बनाया, जिसने मराठा साम्राज्य की उत्पत्ति की। 1674 में, उन्हें औपचारिक रूप से रायगढ़ किले में अपने क्षेत्र के 'छत्रपति' का ताज पहनाया गया।

संभाजी महाराज

संभाजी भोसले (14 मई 1657 - 11 मार्च 1689) मराठा साम्राज्य के दूसरे छत्रपति थे, जिन्होंने 1681 से 1689 तक शासन किया। वे मराठा साम्राज्य के संस्थापक शिवाजी महाराज के सबसे बड़े पुत्र थे। संभाजी महाराज के शासन को काफी हद तक मराठा साम्राज्य और मुगल साम्राज्य के साथ-साथ अन्य पड़ोसी शक्तियों जैसे सिद्दी, मैसूर और गोवा में पुर्तगालियों के बीच चल रहे युद्धों द्वारा आकार दिया गया था। उन्होंने अपनी मृत्यु तक 9 वर्षों तक मराठा क्षेत्र की रक्षा की। औरंगजेब ने उनके साथ विश्वासघात किया और उन्हें बेरहमी से प्रताड़ित किया और मार डाला। संभाजी की मृत्यु के बाद, उनके भाई राजाराम प्रथम को अगले छत्रपति के रूप में उत्तराधिकारी बनाया और मुगल-मराठा युद्धों को जारी रखा।

संत तुकाराम

संत तुकाराम महाराज 17वीं शताब्दी के मराठी कवि, हिंदू संत थे। उन्हें महाराष्ट्र में तुका, तुकोबाराया, तुकोबा के नाम से भी जाना जाता है। वे वारकरी संप्रदाय के संत थे, जो महाराष्ट्र, भारत में भगवान विठ्ठल की पूजा करते हैं, वे समतावादी, व्यक्तिगत वारकरी भक्तिवाद परंपरा का हिस्सा थे। तुकाराम को अभंग नामक उनकी भक्ति कविता और कीर्तन के रूप में जाने जाने वाले आध्यात्मिक गीतों के साथ समुदाय-उन्मुख पूजा के लिए जाना जाता है।

संत नामदेव

संत नामदेव महाराष्ट्र के एक लोकप्रिय संत हैं। संत नामदेव महाराज (26 अक्टूबर 1270 - 3 जुलाई 1350) हिंदू धर्म की वारकरी परंपरा के भीतर महाराष्ट्र के एक मराठी बहुजन संत थे। वह पंढरपुर के भगवान विठ्ठल के भक्त के रूप में जाने जाते है। उन्हें व्यापक रूप से वारकरी परंपरा का संस्थापक माना जाता है।

नामदेव वैष्णववाद से प्रभावित थे और भारत में अपने भक्ति गीतों को संगीत (भजन-कीर्तन) के लिए व्यापक रूप से जाना जाता था। उनके दर्शन में अद्वैतवादी विषयों के साथ निर्गुण और सगुण ब्रह्म दोनों तत्व शामिल हैं। अन्य गुरुओं के साथ, नामदेव की विरासत को वारकरी परंपरा में आधुनिक समय में याद किया जाता है।

उन्हें दादू पंथियों, कबीर पंथियों और सिखों की उत्तर भारतीय परंपराओं में भी मान्यता प्राप्त है। संत नामदेव के कुछ भजन गुरु ग्रंथ साहिब में शामिल हैं।

बाल गंगाधर तिलक

स्वराज की मांग करने वाले बाल गंगाधर तिलक (23 जुलाई 1856 - 1 अगस्त 1920) एक भारतीय लेखक, पत्रकार, शिक्षक और एक स्वतंत्रता सेनानी थे। उन्हें लोकमान्य तिलक के नाम से भी जाना जाता है। तिलक भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के पहले नेता थे। ब्रिटिश औपनिवेशिक अधिकारियों ने उन्हें 'भारतीय अशांति का जनक' कहा गया।

तिलक 'स्वराज' यानी 'स्व-शासन' के पहले और सबसे मजबूत अधिवक्ताओं में से एक थे और भारतीय चेतना में एक मजबूत कट्टरपंथी थे। उन्हें मराठी में उनके उद्धरण के लिए जाना जाता है : 'स्वराज मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है और मैं इसे लेकर ही रहूंगा!'। उन्होंने बिपिन चंद्र पाल, लाला लाजपत राय, अरबिंदो घोष, वी.ओ. चिदंबरम पिल्लई और मुहम्मद अली जिन्ना सहित कई भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस नेताओं के साथ घनिष्ठ गठबंधन बनाया था।

विनोबा भावे

विनायक नरहरि भावे (11 सितंबर 1895 - 15 नवंबर 1982), जिन्हें विनोबा भावे के नाम से भी जाना जाता है,

अहिंसा और मानवाधिकारों के एक मराठी अधिवक्ता थे। अक्सर 'आचार्य' कहे जाने वाले, भावे को भूदान आंदोलन के लिए भी जाना जाता है। उन्हें भारत का राष्ट्रीय शिक्षक और महात्मा गांधी का आध्यात्मिक उत्तराधिकारी माना जाता है। वे एक प्रख्यात दार्शनिक थे। उनके द्वारा गीता का मराठी भाषा में अनुवाद 'गीताई' शीर्षक से किया गया है।

1958 में भावे सामुदायिक नेतृत्व के लिए अंतर्राष्ट्रीय रेमन मैग्सेसे पुरस्कार के पहले प्राप्तकर्ता थे। उन्हें 1983 में मरणोपरांत भारत रत्न से भी सम्मानित किया गया था।

गोपाल कृष्ण गोखले

गोपाल कृष्ण गोखले (9 मई 1866 - 19 फरवरी 1915 भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान एक भारतीय 'उदारवादी' राजनीतिक नेता और समाज सुधारक थे। वह भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के एक वरिष्ठ नेता और सर्वेंट्स ऑफ़ इंडिया सोसाइटी के संस्थापक थे। इस सोसाइटी के माध्यम से समाज के साथ-साथ कांग्रेस और अन्य विधायी निकायों में उन्होंने सेवा की तथा भारतीय स्व-शासन और सामाजिक सुधारों के लिए अभियान चलाया।

महात्मा ज्योतिबा फुले

ज्योतिबा गोविंदराव फुले (11 अप्रैल 1827 - 28 नवंबर 1890), जिन्हें महात्मा फुले के नाम से भी जाना जाता है, महाराष्ट्र के एक भारतीय सामाजिक कार्यकर्ता, विचारक, जाति-विरोधी समाज सुधारक और लेखक थे। उनका काम अस्पृश्यता और जाति व्यवस्था के उन्मूलन और महिलाओं और उत्पीड़ित जाति के लोगों को शिक्षित करने के उनके प्रयासों सहित कई क्षेत्रों तक फैला हुआ है। वह और उनकी पत्नी सावित्रीबाई फुले, भारत में महिला शिक्षा के अग्रदूत थे।

फुले ने लड़कियों के लिए अपना पहला स्कूल 1848 में पुणे में तात्यासाहेब भिडे के निवास या भिडेवाड़ा में शुरू किया। उन्होंने अपने अनुयायियों के साथ निचली जातियों के लोगों के लिए समान अधिकार प्राप्त करने के लिए सत्यशोधक समाज का गठन किया। सभी धर्मों और जातियों के लोग इस संघ का हिस्सा बन सकते थे जो उत्पीड़ित वर्गों के उत्थान के लिए काम करता था। फुले को महाराष्ट्र में सामाजिक सुधार आंदोलन में एक महत्वपूर्ण व्यक्ति माना जाता है। उन्हें 1888 में महाराष्ट्रीयन सामाजिक कार्यकर्ता विट्ठलराव कृष्णाजी वंदेकर द्वारा 'महात्मा' की उपाधि से सम्मानित किया गया था।

सावित्रीबाई फुले

महाराष्ट्र की एक महानतम समाज सुधारक, शिक्षाविद् और कवियित्री सावित्रीबाई फुले ने अपने पति ज्योतिबा फुले के साथ महाराष्ट्र में महिलाओं के अधिकारों को बेहतर बनाने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उन्हें भारत के नारीवादी आंदोलन की अग्रणी माना जाता है। सावित्रीबाई और उनके पति ने 1848 में भिडेवाडा में पुणे में पहले आधुनिक भारतीय लड़कियों के स्कूल में से एक की स्थापना की। उन्होंने जाति और लिंग के आधार पर लोगों के साथ भेदभाव और अनुचित व्यवहार को खत्म करने के लिए काम किया।

विनायक दामोदर सावरकर

विनायक दामोदर सावरकर (28 मई 1883 - 26 फरवरी 1966), एक भारतीय राजनीतिज्ञ, कार्यकर्ता और लेखक थे। उन्होंने 1922 में रत्नागिरी में कैद के दौरान 'हिंदुत्व' की हिंदू राष्ट्रवादी राजनीतिक विचारधारा विकसित की। सावरकर हिंदू महासभा में एक प्रमुख व्यक्ति थे। वह हिंदू महासभा में शामिल हो गए और भारत के सार के रूप में एक सामूहिक 'हिंदू' पहचान बनाने के लिए पहले चंद्रनाथ बसु द्वारा गढ़े गए 'हिंदुत्व' शब्द को लोकप्रिय बनाया। सावरकर एक नास्तिक थे लेकिन हिंदू दर्शन के व्यावहारिक अभ्यासी थे।

ताराबाई

ताराबाई भोसले (1675 - 1761) 1700 से 1708 तक भारत के मराठा साम्राज्य की प्रतिनिधि थीं। वह छत्रपति राजाराम भोंसले की रानी थीं और साम्राज्य के संस्थापक

छत्रपति शिवाजी महाराज की बहू थीं। वह अपने पति की मृत्यु के बाद मराठा क्षेत्रों के मुगल कब्जे के खिलाफ प्रतिरोध को जीवित रखने और अपने बेटे शिवाजी द्वितीय के अल्पसंख्यक होने के दौरान रीजेंट के रूप में कार्य करने में उनकी भूमिका के लिए प्रशंसित हैं।

पंडिता रमाबाई

पंडिता रमाबाई सरस्वती (23 अप्रैल 1858 - 5 अप्रैल 1922) एक भारतीय समाज सुधारक थीं। वह पहली महिला थीं जिन्हें कलकत्ता विश्वविद्यालय के संकाय द्वारा परीक्षा के बाद संस्कृत विद्वान और सरस्वती के रूप में पंडिता की उपाधि से सम्मानित किया गया था। वह 1889 के कांग्रेस अधिवेशन की दस महिला प्रतिनिधियों में से एक थीं। पंडिता रमाबाई का जन्म 23 अप्रैल 1858 को एक ब्राह्मण परिवार में हुआ था। 1880 के दशक की शुरुआत में इंग्लैंड में रहने के दौरान वह ईसाई धर्म में परिवर्तित हो गईं। उसके बाद उन्होंने निराश्रित भारतीय महिलाओं के लिए धन इकट्ठा करने के लिए संयुक्त राज्य अमेरिका में बड़े पैमाने पर दौरा किया। एकत्रित धन से उन्होंने बाल विधवाओं के लिए शारदा सदन शुरू किया। 1890 के दशक के उत्तरार्ध में, उन्होंने पुणे शहर से चालीस मील पूर्व केडगाँव नामक गाँव में एक 'ईसाई धर्मार्थ मुक्ति मिशन' की स्थापना की। इस मिशन को बाद में 'पंडिता रमाबाई मुक्ति मिशन' नाम दिया गया।

लता मंगेशकर

'भारत रत्न' लता मंगेशकर वह व्यक्तित्व हैं, जो अपने साठ साल से अधिक के गायन कैरियर में बीस से अधिक भाषाओं में तीस हजार से अधिक गाने गाकर एक जीवित किंवदन्ती बन चुकी है। उनके गीतों में माधुर्य एवं कर्णप्रियता का समावेश होता है, यही कारण है कि जब कई लोगों ने उनके द्वारा गाए गए गीतों में से श्रेष्ठ गीतों की सूची बनानी चाही, तो उस सूची में 'किसे रखे और किसे छोड़ें' की समस्या उत्पन्न हो गई। उनके द्वारा गाया गया प्रत्येक गीत स्वयं में अनूठा होता है। वह भारत की सर्वाधिक लोकप्रिय एवं सम्माननीय गायिका हैं।

सचिन तेन्दुलकर

'खेलों की दुनिया में कुछ ऐसी उपलब्धियाँ होती हैं, जिन तक पहुँचना आसान नहीं होता। अन्तर्राष्ट्रीय एक-दिवसीय क्रिकेट में कोई बल्लेबाज अब तक 200 रन नहीं बना पाया था, लेकिन भारत के सचिन तेन्दुलकर ने दक्षिण अफ्रीका की मजबूत टीम के खिलाफ यह कर दिखाया।' इन्हीं पंक्तियों के साथ अमेरिका की प्रतिष्ठित पत्रिका 'टाइम' ने मास्टर ब्लास्टर सचिन की 24 फरवरी, 2010 को दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ ग्वालियर वनडे में खेली गई नाबाद 200 रन की विश्व रिकॉर्ड पारी को उस वर्ष के दस सबसे यादगार क्षणों में शामिल किया था। 'टाइम' पत्रिका द्वारा कही गई बात सत्य है। सचिन क्रिकेट जगत में एक ऐसी जीती-जागती मिसाल बन गए, जिसका कोई मुकाबला नहीं। केवल भारत ही नहीं विदेशों में भी उनके चाहने वालों की कमी नहीं है, इन्हें क्रिकेट का भगवान कहा जाता है।

निःसंदेह हम कह सकते हैं महाराष्ट्र की धरती की माटी ने ऐसे अनमोल रत्न पैदा किए हैं, जिन्होंने विश्व स्तर पर ख्याति प्राप्त की है।

पुणे के दर्शनीय स्थल

शिवम उपाध्याय
सहायक प्रबंधक (राजभाषा)
अंचल कार्यालय, सूरत
जन्म स्थान : सीहोर, मध्यप्रदेश
शैक्षिक योग्यता : बी कॉम, एम.ए. (हिंदी)
विशेष उपलब्धियाँ/रुचि : टेबल टेनिस खेलना,
अनुवाद कार्य

पुणे भारत के महाराष्ट्र राज्य का एक महत्त्वपूर्ण शहर है। पुणे भारत का छठवां सबसे बड़ा शहर व महाराष्ट्र का दूसरा सबसे बड़ा शहर है। यह शहर महाराष्ट्र के पश्चिम भाग, मुला व मुठा इन दो नदियों के किनारे बसा है और पुणे जिला का प्रशासकीय मुख्यालय है। सार्वजनिक सुख-सुविधा व विकास के हिसाब से पुणे महाराष्ट्र में मुंबई के बाद अग्रसर है। छत्रपति शिवाजी का यह ऐतिहासिक शहर महाराष्ट्र की सांस्कृतिक राजधानी भी है। इस शहर के भव्य ऐतिहासिक किले, समुद्री बीच, हरियाली और कई बहते हुए झरने आपको अपनी तरफ आकर्षित करते हैं। पुणे आपको समृद्ध इतिहास और आधुनिकता का एक साथ परिचय करवाता है। तो चलिए आज हम पुणे के कुछ पर्यटन स्थलों के बारे में जानते हैं :-

शिवनेरी किला

शिवनेरी किला पुणे में देखने की सबसे खास जगह है। बता दें कि यह किला महान मराठा सम्राट शिवाजी का जन्म स्थान था और इसी जगह उन्होंने मराठा राजवंश के निर्विवाद राजा के रूप में अपनी भावी भूमिका का शुरुआती प्रशिक्षण लिया था। शिवनेरी किला 300 मीटर ऊंची एक पहाड़ी पर स्थित है जिसको देखने जाने के लिए आपको सात फाटकों को पार करना पड़ता है। इस किले के फाटकों से इस बात का पता चलता है कि उस समय इस किले की सुरक्षा कितनी अच्छी थी। शिवनेरी किले का सबसे खास आकर्षण अपनी माँ जीजाबाई के साथ शिवाजी की एक मूर्ति है। अगर आप शिवनेरी किला देखने जाते हैं तो आप इसके साथ यहां भैरवगढ़, चावंड जीवधन और जुमनेर सहित शिवनेरी पहाड़ी के दूसरे किलों को भी देख सकते हैं।

आगा खान पैलेस

पुणे में घूमने की जगह आगा खान पैलेस अपने नाम से बिल्कुल अलग है। आगा खान पैलेस में महात्मा गांधी, कस्तूरबा

गांधी और महादेव भाई देसाई (गांधी के सचिव) को अगस्त 1942 और मई 1944 के बीच जेल में बंदी बनाकर रखा गया था। आगा खान पैलेस को सुल्तान मुहम्मद शाह आगा खान III ने वर्ष 1892 में बनाया था। इस पैलेस को पड़ोस में रहने वालों की मदद बनाया गया था, लेकिन इसके अकाल के समय बुरे प्रभावों का सामना करना पड़ा था।

राजा दिनकर केलकर संग्रहालय

राजा दिनकर केलकर संग्रहालय पुणे के सबसे ज्यादा देखे जाने वाले पर्यटक स्थलों में से एक है, जहाँ पर भारत के विभिन्न हिस्सों से कलाकृतियों के संग्रह है। डॉ. डी जी केलकर इस संग्रहालय के पीछे के प्रमुख आदमी है। राजा दिनकर केलकर संग्रहालय राजा की स्मृति में बनवाया गया है जिनका एक मात्र पुत्र दुखद रूप से मारा गया था। यह संग्राहलय देश का दूसरा सबसे बड़ा संग्राहलय है, जो 21000 से अधिक विभिन्न युगों, जातियों, संस्कृतियों और परंपराओं का प्रतिनिधित्व करता है। इस संग्रहालय में कई तरह की लकड़ी की वस्तुएं, सिक्के, वस्त्र, हथियार, मूर्तियां, हाथी दांत की वस्तुएं, लेखन सामग्री, पेंटिंग और विभिन्न अन्य वस्तुओं का संग्रह है।

ओशो आश्रम

महाराष्ट्र राज्य के पुणे के कोरेगाँव पार्क में स्थित है। यह बहुत प्रसिद्ध पर्यटन स्थलों में से एक है। इस आश्रम के संस्थापक रजनीश चंद्र मोहन जैन थे, जो ओशो रजनीश के रूप में लोगों के बीच बहुत प्रसिद्ध हैं। इस आश्रम को पुणे के ओशो कम्यून इंटरनेशनल के रूप में एक खिताब मिला है। यह आश्रम 32 एकड़ भूमि में फैला हुआ है। जो लोग शांति और आराम चाहते है वह लोग यहाँ बहुत शांति से रह सकते है।आप लोग जब वहाँ जाओगे तब आपको आश्रम से प्यार हो जाएगा, क्योंकि यह शुद्ध शांति और हरियाली की भूमि पर मौजूद है। यहाँ शहर के प्रदूषण की हलचल से बहुप्रतीक्षित विराम देता है। वर्तमान में, यह ओशो आश्रम सबसे अधिक देखा जाने वाला पर्यटन स्थल है, क्योंकि इसने पुणे आने वाले पर्यटकों के बीच प्रसिद्धि हो चुकी है। पुणे में शांत यह वातावरण वाले सबसे शांत स्थानों में से एक है, जो आश्रम में मौजूद रोमांचक भीड़ को खींचने में प्रमुख है। यह आश्रम योग और ध्यान के लिए समर्पित है। इस आश्रम में शरीर और को आत्मा शांत होने की प्राकृतिक विशेषताओं को संरक्षित करते हैं।

शनिवार वाडा

पर्यटन के लिहाज से एक प्रमुख ऐतिहासिक स्थल शनिवारवाड़ा है जिसे सबसे अच्छे पुणे पर्यटन स्थलों में से एक माना जाता है। यह एक राजसी किला है जिसे 1732 में बनाया गया था और उस समय यह मराठा साम्राज्य के पेशवाओं की सीट थी और उन्होंने 1818 तक वहां शासन किया था। शनिवारवाड़ा पेशवाओं की सात मंजिला राजधानी इमारत थी और वे चाहते थे कि यह इमारत केवल पत्थर से बनी हो। हालाँकि, भूतल के पूरा होने के बाद, सतारा के लोगों ने जोर देकर कहा कि पत्थर के स्मारक को केवल शाहू राजा द्वारा ही स्वीकृत और निर्मित किया जा सकता है, न कि पेशवाओं द्वारा। इसके संबंध में पेशवाओं को केवल ईंटों का उपयोग करके भवन का निर्माण जारी रखने के लिए कहा गया था। लेकिन जब अंग्रेजों ने हमला किया, तो केवल आधार तल बच गया, जबकि अन्य सभी तल पूरी तरह से नष्ट हो गए। पहले किले में लगभग एक हजार लोग समा सकते थे।

पातालेश्वर गुफा मंदिर

पुणे जंक्शन से 3 किमी की दूरी पर, पातालेश्वर गुफा मंदिर पुणे के शिवाजीनगर इलाके में महाराज रोड पर स्थित एक प्राचीन रॉक कट गुफा मंदिर है। यह पुणे के दर्शनीय स्थलों की यात्रा के शीर्ष स्थानों में से एक है और भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (एएसआई) द्वारा बनाए रखा जाता है। मंदिर को पंचलेश्वर या बाम्बुरदे मंदिर भी कहा जाता है और यह भगवान शिव को समर्पित है। 8वीं शताब्दी ईस्वी में राष्ट्रकूट काल के

दौरान रॉक कट गुफा मंदिर बनाया गया था। गुफा मंदिर एलोरा के चट्टानों के टुकड़ों के समान दिखता है। इसे महाराष्ट्र सरकार द्वारा संरक्षित स्मारक के रूप में घोषित किया गया है।

मंदिर के पास एक संग्रहालय है जो गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड्स में सूचीबद्ध है। चावल का एक दाना जिस पर लगभग 5,000 वर्ण अंकित हैं, संग्रहालय का प्रमुख आकर्षण है। प्रसिद्ध जांगली महाराज मंदिर भी इस स्मारक के बहुत करीब है। त्रिपुरी पौर्णिमा (कार्तिक माह का पूर्णिमा दिवस) के अवसर पर हजारों तेल लैंपों के साथ इस गुफा मंदिर का परिसर जगमगाया जाता है। यह स्थान पुणे के दर्शनीय स्थल में पुणे का महत्वपूर्ण तीर्थ है।

इसके अलावा पुणे शहर में कई ऐतिहासिक स्थल व पर्यटन स्थल है। पुणे शहर भारत के इतिहास में अपना महत्वपूर्ण स्थान रखता है। यह शहर अपने आप में कई महत्वपूर्ण घटना व देश के इतिहास में हुए कई राजनीतिक परिवर्तन का गवाह है।

पृष्ठ 13 का शेष भाग

पारित करके महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय की स्थापना राष्ट्रपिता की कर्मभूमि वर्धा में की गयी। यह अधिनियम शिक्षा और अनुसंधान के माध्यम से हिंदी भाषा और साहित्य के संवर्द्धन एवं विकास हेतु एक ऐसे आवासीय विश्वविद्यालय की स्थापना प्रस्तावित करता है जो हिंदी भाषा में श्रेष्ठतर क्रियात्मक कार्यदक्षता विकसित करने में समर्थ हो। भारतीय स्वतंत्रता संग्राम का इतिहास साक्षी है हिंदी आपसी सहयोग, साहचर्य एवं प्यार की भाषा है।

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय एक विशिष्ट विश्वविद्यालय है। यहाँ विदेशी भाषाएं यथा फ्रेंच, चीनी, स्पेनिश और जापानी हिंदी माध्यम से पढ़ाई जाती हैं। विश्वविद्यालय में आठ संकाय हैं। ये हैं भाषा विद्यापीठ, साहित्य विद्यापीठ, संस्कृति विद्यापीठ, अनुवाद तथा निर्वचन विद्यापीठ, मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान विद्यापीठ, विधि विद्यापीठ, प्रबंधन विद्यापीठ तथा शिक्षा विद्यापीठ।

हिंदी की सृजनशीलता और समृद्धि में महाराष्ट्र का सदैव सहयोग रहा है। आज महाराष्ट्र राज्य हिंदी साहित्य अकादमी की देन है कि मुंबई ही नहीं महाराष्ट्र के सभी जिलों, गांव और कस्बों में भी हिंदी को अच्छी खासी पहचान मिल रही है। इससे हिंदी साहित्य समृद्ध हो रहा है और हिंदी सारे देश को एक सूत्र में पिरोने का कार्य कर रही है।

सारत: यह कहने की आवश्यकता नहीं है कि हिंदी की विकास यात्रा में महाराष्ट्र का महान योगदान है। महाराष्ट्र के बिना हिंदी की विकास गाथा पूरी नहीं हो सकती है। हिंदी के उत्थान में महाराष्ट्र की संत परंपरा, साहित्य परंपरा, स्वाधीनता संग्राम के दौरान महापुरुषों द्वारा किए गए अथक प्रयास, विभिन्न संस्थाओं की प्रतिबद्धता आदि का साक्षात्कार करने पर यह विश्वास एवं गौरव के साथ कहा जाता है कि महाराष्ट्र हिंदी का गढ़ है।

महाराष्ट्र की सांस्कृतिक विरासत

राम अभिषेक तिवारी
प्रबंधक (राजभाषा)
राजभाषा विभाग, प्रधान कार्यालय
जन्म स्थान : करंजो, देवघर
शैक्षिक योग्यता : स्नातक
विशेष उपलब्धियाँ/रुचि :
अनुवाद कार्य में रुचि, क्रिकेट खेलना

भारतीय सांस्कृतिक विरासत का चित्र इसकी अंगीभूत इकाइयों की सांस्कृतिक पहचान का एक समन्वित रूप है। स्थापत्य तथा शिल्प की भारतीय गाथा एलीफेंटा की गुफा में स्थित त्रिमूर्ति महादेव के बिना क्या लिखी जा सकती है? भारतीय अध्यात्म साधना का विवरण त्रिमूर्ति महादेव के स्वरूप को हटाकर क्या पूरा किया जा सकता है? भारतीय साहित्य विशेषकर भक्ति साहित्य मराठी संतों की वाणी के बिना पूरा हो सकता है? भारतीय शौर्य की कथा मराठा स्वाभिमान तथा पराक्रम की गाथा के बिना पूरी हो सकती है? शायद नहीं। समासतः इसी चर्चा में हमें महाराष्ट्र की सांस्कृतिक विरासत के सूत्र दिख जाते हैं।

महाराष्ट्र भारत गणतन्त्र का तीसरा सबसे बड़ा राज्य है। यह भारतीय प्रायद्वीप के दक्षिण में स्थित है। इसकी गिनती भारत के सबसे धनी एवं समृद्ध राज्यों में की जाती है। इस राज्य ने मानवीय कार्यकलाप के हर क्षेत्र में उत्कर्षता के मानदंड स्थापित किए हैं। यहाँ के संतों, कलाकारों, साहित्यकारों तथा शिल्पियों ने शताब्दी की अपनी साधना से इस राज्य की एक सांस्कृतिक विरासत छोड़ी है। यदि बहार्ट लधु विश्व है तो महाराष्ट्र लघु भारत है।

महाराष्ट्र का एक गौरवशाली इतिहास रहा है। महाराष्ट्र के विभिन्न क्षेत्रों पश्चिमी महाराष्ट्र (मराठवाड़ा), विदर्भ, उत्तरी महाराष्ट्र (खानदेश), कोंकण का भोजन, लोक-गीत, मराठी भाषा की विभिन्न बोलियाँ यहाँ की विशिष्ट सांस्कृतिक विरासत की पहचान है। महाराष्ट्र सांस्कृतिक विविधता में एकता प्रदर्शित करता है, यहाँ की संस्कृति अनुपम है। महाराष्ट्र की भावना महानगरीय, अग्रगामी, सहिष्णु और जीवंत है। यहाँ के विविध ऐतिहासिक स्थलों (मंदिरों, किलों, पुराने स्मारकों), मराठी भाषा और मराठी साहित्य का विकास महाराष्ट्र की सांस्कृतिक पहचान की अभिव्यक्ति है।

वाकाटक राजवंश ने लगभग 250 से 470 ईस्वी तक शासन

किया, वाकाटकों के समय अजंता गुफाओं का निर्माण हुआ। चालुक्यों का शासन पहले सन 550-760 तथा पुन: 972-1180 तक रहा। इसके बीच राष्ट्रकूटों का शासन आया था। अलाउद्दीन खिलजी वो पहला मुस्लिम शासक था, जिसने अपना साम्राज्य दक्षिण में मदुरै तक फैला दिया था। उसके बाद मोहम्मद बिन तुगलक (1325) ने अपनी राजधानी दिल्ली से हटाकर दौलताबाद कर ली, यह स्थान पहले देवगिरि नाम से प्रसिद्ध था और अहमदनगर के निकट स्थित है। बहमनी सल्तनत के टूटने पर यह प्रदेश गोलकुंडा के अधीन आया और उसके बाद औरंगजेब का संक्षिप्त शासन रहा। छत्रपति शिवाजी ने महाराष्ट्र के पहाड़ी किलों की सहायता से मराठा साम्राज्य की नींव रखी, धीरे-धीरे यह पाकिस्तान में सिंधु नदी के तट पर अटक तक फैले शक्तिशाली साम्राज्य के रूप में विकसित हुआ।

महाराष्ट्र आध्यात्मिक साधना का तीर्थ रहा है। महाराष्ट्र का भक्ति आंदोलन मुख्य रूप से दो संप्रदायों में विभक्त था। पहला, रहस्यवादियों का वारकरी संप्रदाय जो पंढरपुर के विट्ठल भगवान के तथा दूसरा, धरकरी संप्रदाय जो भगवान राम के भक्त हैं। वारकरी धार्मिक आंदोलन के मराठी संतों का लंबा इतिहास है, जिनमें संत ज्ञानेश्वर, नामदेव, एकनाथ और तुकाराम जैसे संत शामिल हैं, महाराष्ट्र नाम भी यहाँ के संतों की देन है।

अन्य वैष्णव भक्ति आंदोलनों के समान महाराष्ट्र के वैष्णव आंदोलन पर भी भगवत गीता का प्रभाव है, महाराष्ट्र में भक्ति आंदोलन तेरहवीं शताब्दी में ज्ञानेश्वर के साथ शुरू हुआ, इन्होंने भगवत गीता पर एक लंबी मराठी टीका 'भावार्थ दीपिका' लिखी। संत ज्ञानेश्वर नाथ संप्रदाय में दीक्षित थे। बैठोवा पंथ के तीन महान गुरु ज्ञानेश्वर, नामदेव और तुकाराम थे।

17वीं सदी के मराठा साम्राज्य के राजा शिवाजी और उनकी हिंदवी साम्राज्य की अवधारणा (लोगों का स्व-शासन) के कारण महाराष्ट्र का पूरी दुनिया में बड़ा प्रभाव है। महाराष्ट्र राज्य में कई संस्कृतियों का फैलाव है, जिनमें वैदिक हिन्दू, मुस्लिम, जैन, बौद्ध, सिख, ईसाई आदि से संबंधित संस्कृतियाँ शामिल हैं। अधिकांश जनसंख्या (लगभग 80 प्रतिशत) हिन्दू धर्मावलम्बी हैं, अन्य सभी धर्मों के लोग भी स्वतंत्र रूप से अपने धार्मिक मान्यताओं का पालन करते हैं।

महाराष्ट्र के कुछ सबसे प्रमुख धार्मिक स्थानों में, त्र्यंबकेश्वर मंदिर, सिद्धिविनायक मंदिर, महालक्ष्मी मंदिर, पंढरपुर मंदिर, शिर्डी साईं बाबा मंदिर, शनि शिंगनापुर और भीमाशंकर मंदिर आदि हैं। कोल्हापुर, तुलजापुर, अकोला, चिपलूण व अन्य धार्मिक स्थलों पर दूर-दूर से श्रद्धालु आते हैं।

राज्य में कई प्रसिद्ध बौद्ध आध्यात्मिक स्थान हैं जैसे अजंता और एलोरा गुफाएँ, कार्ला गुफाएँ और वैश्विक विपश्यना पगोडा, इसके अलावा प्रसिद्ध हाजी अली दरगाह व एक सूफी संत का मकबरा है। जैन आध्यात्मिक स्थानों में पालिताना जैन मंदिर और कोल्हापुर में श्री भवानी संग्रहालय शामिल हैं।

संत ज्ञानेश्वर को ही मराठी भाषा का सर्वश्रेष्ठ कवि माना जाता है। 15 वर्ष की आयु में लिखी गई उनकी रचना 'ज्ञानेश्वरी' अत्यंत प्रसिद्ध है। उनके ग्रंथ 'अमृतानुभव' तथा 'चांगदेव पासष्टी' वेदान्त चर्चा से ओतप्रोत हैं। संत ज्ञानेश्वर का श्रेष्ठत्व उनके अलौकिक ग्रंथ निर्माण के समान ही उनकी भक्तिपंथ की प्रेरणा में भी विद्यमान है। संत कवि एकनाथ की एकनाथी भागवत मराठी साहित्य की साहित्यिक कृति है, संत तुकाराम भी मराठी के महान संत-कवि थे। तुकाराम की राह पर कवि रामदास ने एक समृद्ध साहित्यिक भाषा में 'दासबोध' और 'मंच श्लोक' जैसे साहित्यिक कार्यों का प्रतिपादन किया है।

महाराष्ट्र विभिन्न शिल्प कलाओं के लिए भी जाना जाता है। बुनाई, खिलौने बनाना, कोल्हापुरी चप्पल बनाना आदि यहां की प्रसिद्ध शिल्प कलाएं हैं। वारली चित्रकला,

आदिवासी कला है, जो ज्यादातर महाराष्ट्र में उत्तरी सहयाद्रि रेंज के आदिवासी लोगों द्वारा बनाई गई है। इस श्रेणी में पालघर जिले के दहानू, तलसारी, जव्हार, मोखड़ा और विक्रमगढ़ जैसे शहर शामिल हैं। यह चित्रकला सरल और रैखिक है, जिसमें त्रिकोणीय आकृतियों का अधिकतम उपयोग होता है। इस चित्रकला का महत्वपूर्ण पहलू यह है कि इसमें पौराणिक चरित्रों का नहीं, अपितु सामाजिक जीवन का चित्रण किया गया है।

महाराष्ट्र के लोक संगीत और नृत्य कोली, पोवाड़ा, बंजारा होली और लावणी नृत्य हैं। लावणी नृत्य शैली रोमांस, त्रासदी, राजनीति, समाज आदि कई विषयों को प्रदर्शित करती है। पोवाड़ा नृत्य शैली शिवाजी की उपलब्धियों को दर्शाती है। मराठी में रंगमंच की ऐतिहासिक परंपरा है। इसका प्रारम्भ 1843 में हुआ। आरंभ काल में ऐतिहासिक विषयों तथा पुरानों के आधार पर नाटकों में स्वदेश प्रेम, स्वतन्त्रता के प्रति आस्था से संबंधित विषय रहे। इन नाटकों पर तिलक, चिपलूणकर जैसी विभूतियों के विचारों का प्रभाव था।

व्यंजनों के लिए भी महाराष्ट्र अपनी राष्ट्रीय पहचान रखता है। यहाँ के भोजन में हल्के और मसालेदार व्यंजन शामिल हैं। गेहूं, चावल, ज्वार, बाजरा, सब्जियाँ, दालें और फल आहार के प्रमुख खाद्य पदार्थ हैं। मूँगफली और काजू को बहुत बार सब्जियों के साथ परोसा जाता है। संस्कृति के कारण मांस का उपयोग पारंपरिक रूप से बहुत कम है। यहाँ कई प्रकार के विशेष व्यंजन बनाए जाते हैं, यहाँ की पूरन पोली, थाली पीठ, बड़ा-पाव और पाव-भाजी विश्व प्रसिद्ध है।

महाराष्ट्रीयन लोगों का पारंपरिक पहनावा बहुत सुंदर होता है। पुरुष धोती पहनते हैं, जिसे धोरार और फेरा भी कहा जाता है। महिलाएं चोली और नौ गज की साड़ी पहनती हैं, जिसे स्थानीय तौर पर नौवारी साड़ी के नाम से जाना जाता है। कपड़ों की यह शैली अभी भी महाराष्ट्र के ग्रामीण हिस्सों और शहर में रहने वाले पारंपरिक लोगों के बीच प्रचलित है। यहाँ के निवासी त्योहारों व विशेष अवसरों पर इस पारंपरिक परिधान को पहनते हैं।

महाराष्ट्र के लोगों की जीवनशैली सरल है, वे कड़ी मेहनत में विश्वास रखते हैं और उसी से अपनी जीविका चलाते हैं। यहां के मूल निवासियों की कठिन जीवन शैली ने उनमें जुझारूपन का जज़्बा जगाया है। इससे स्वतन्त्रता संग्राम को बल मिला। यहाँ के मूल निवासियों की देहाती जीवनशैली भाईचारे में विश्वास करती है। ये मूल रूप से अपने धर्म और संस्कृति से जुड़े रहकर आधुनिकता की ओर अग्रसर हैं।

निष्कर्ष :

महाराष्ट्र की सांस्कृतिक विरासत भारतीय संस्कृति को विशिष्ट रूप प्रदान करती है। इसमें विविधता और एकीकरण पर जोर है। इस विरासत में मराठा शासकों किलों की वास्तुकला, भव्य एलोरा और अजंता गुफाएं हैं शामिल हैं। संतों की परम्परा यथा एकनाथ, तुकाराम, नामदेव आदि का उल्लेख किए बिना महाराष्ट्र की सांस्कृतिक विरासत की चर्चा अधूरी रहेगी। महाराष्ट्र की जनजातीय संस्कृति से महाराष्ट्रीय विरासत के सभी पक्ष अलंकृत हुए हैं। वारली पेंटिंग जनजातीय कला का एक रूप है जो ज्यादातर महाराष्ट्र में उत्तरी सह्याद्रि रेंज के आदिवासी लोगों द्वारा बनाई गई है। आज इसकी अन्तर्राष्ट्रीय पहचान भारतीय चित्रकला के रूप में स्थापित होकर भारत का गौरव बढ़ा रही है।

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि महाराष्ट्र की सांस्कृतिक विरासत भारतीय सांस्कृतिक विरासत के चित्रपट की उज्ज्वल आभा है। इसमें शिवाजी महाराज के शौर्य का केसरिया रंग है, दुर्गों की अजेयता के स्मारक हैं, अजंता की चित्रकला है, एलोरा का मूर्ति शिल्प, लोकजीवन में अनुस्यूत राग-रंग है, गणेश चतुर्थी की भव्यता तथा गहन उपासना के भाव हैं, गुड़ी पड़वा के अवसर पर बिखरती मधुरता है, रूढ़िवादी परंपरा पर मानवता की विजय के पदचिह्न हैं। इस महान विरासत का उत्तराधिकारी होने पर हम सभी भारतीय गौरवान्वित हैं।

गीता के अभिनव व्याख्याकार : लोकमान्य तिलक

अमरदीप कुलश्रेष्ठ
मुख्य प्रबंधक (राजभाषा)
अंचल कार्यालय, पुणे
जन्म स्थान : भववती, जिला : चंद्रपुर (महाराष्ट्र)
शैक्षिक योग्यता : एम.ए., अंग्रेजी साहित्य,
अंग्रेजी-हिन्दी अनुवाद डिप्लोमा
विशेष उपलब्धियाँ/रुचि : दो काव्य-संग्रह प्रकाशित
(बात वो नहीं है, इतिहास का आदमी),
'गीता का संसार' नामक ग्रंथ प्रकाशाधीन,
अनेक प्रकाशित पुस्तकों का संपादन

श्रीयुत बाल गंगाधर तिलक, जिन्हें तत्कालीन समाज ने 'लोकमान्य' की उपाधि प्रदान की। लोकमान्य भारतीय जनमानस की नस-नस को भलीभांति पहचानने वाले सहृदय व्यक्तित्व थे, साथ ही उनकी बुद्धि भी अप्रतिम विश्लेषण शक्ति रखती थी। वे गरम दल के अग्रणी नेता थे जो गैर-समझौतावादी तरीके से भारत की आजादी की वकालत करते थे। तिलक ने स्वामी विवेकानन्द को अपना राजनीतिक गुरु माना। उग्रवादी नेता बाल गंगाधर तिलक स्वामी विवेकानन्द को अपना राजनीतिक गुरु कहते थे। तिलक को भारत में असंतोष के जनक और होम रूल आंदोलन (1916) के संस्थापक के रूप में जाना जाता है। उनके असाधारण नेतृत्व तथा व्यक्तित्व को परिभाषित करने वाले उनके गुणों में प्रमुख था व्यवस्था, वर्तमान मूल्यों और अपने विरोधियों पर सवाल उठाने की उनकी क्षमता। इसी क्षमता के बल पर उन्होंने स्वराज प्राप्त करने के लिए अपनी योजना और मार्ग बनाने का संकल्प लिया।

तिलक संस्कृति और राजनीति के बीच संबंध को समझते थे। अतः उन्होंने युवाओं में सांस्कृतिक विरासत और गौरवशाली अतीत पर गर्व की भावना पैदा करने की दिशा में काम किया ताकि उनमें देशभक्ति की भावना पैदा हो। तिलक को भारत की सांस्कृतिक और आध्यात्मिक लोकाचार की बहाली के साथ-साथ राजनीतिक स्वतंत्रता की परिकल्पना करनेवाले राष्ट्रनायकों में अग्रणी माना जाता है। वे एक आध्यात्मिक, बौद्धिक और राजनीतिक दिग्गज थे। उनके विचार और भाषण गीता, वेदांत-सूत्र और महाभारत की शिक्षाओं से काफी प्रभावित थे। गीता-रहस्य, उनकी महान रचना हिंदू दर्शन, विशेषकर कर्म-योग की उनकी गहरी समझ और विवेकपूर्ण व्याख्या का आदर्श उदाहरण है। उनका राष्ट्रवाद का आध्यात्मिकता की भावना से अभिन्न था। वे उन कुछ दूरदर्शी राष्ट्रनायकों में से एक थे जिन्होंने राष्ट्र निर्माण में धर्म और आध्यात्मिकता की भूमिका समझी और अपने प्राचीन मूल्यों पर आधारित आधुनिक भारत के निर्माण के लिए अथक प्रयास किया।

तिलक का विश्वास था कि भगवद्गीता एक ऐसा ग्रंथ है जो भारतीय युवा की आध्यात्मिक और सांसारिक दोनों महत्त्वाकांक्षाओं को संप्रेरित कर सकता है, लोकसंग्रह का आधार बन सकता है। वे गीता को एक ऐसे सशक्त सैद्धांतिक उपकरण के रूप में ढालने के इच्छुक थे जो फिरंगियों के स्वार्थपूर्ण शोषणपरक इरादों के विरुद्ध रामबाण का काम देता। दूसरी ओर, इस औजार में भारत के जन-जन की विचारणा में सहज रूप से उतर जाने और उसकी धार्मिक उत्कंठा को भी शांत करने का गुण मौजूद होना आवश्यक था।

गीता के परिप्रेक्ष्य के निर्धारण में लोकमान्य ने बहुत मेहनत की थी। उस समय तक प्रचलित गीता की समस्त प्रमुख टीकाओं का उन्होंने बारीकी से अध्ययन किया, चाहे वह शांकर भाष्य हो, संत ज्ञानेश्वर कृत ज्ञानेश्वरी हो, महर्षि दयानंद द्वारा व्यक्त दृष्टिकोण हो अथवा कुछ और। इसके साथ ही उन्होंने पश्चिम में गीता पर व्यक्त की गई वैचारिक संस्थापनाओं को भी विस्तार से पढ़ा और जाना था। यह सही है कि वे गीता को जनता के कर्तव्यप्रबोधन और राष्ट्रप्रेम के साधन रूप में रूपायित करने के आकांक्षी थे, परंतु इस पुनीत उद्देश्य के लिए भी उन्हें गीता के सनातन आशय और निश्चय के साथ कोई अन्याय नहीं होने देना था। यह बहुत बड़ी जिम्मेदारी थी। गीता तो हर युग के लिए है। आप उसमें से अपने युग के काम की चीज़ें निकाल लें और जनता के समक्ष रखें यह उपादेय है, लेकिन इसके चलते गीता के किसी युक्तियुक्त सिद्धांत की उपेक्षा अथवा अन्यथा प्रस्तुति हो जाना किसी महापाप से कम नहीं होगा।

तिलक जी ने सर्वप्रथम यह प्रतिपादित किया कि गीता की मूल विषयवस्तु, मूल प्रतिपाद्य क्या है! अपने सुविस्तीर्ण अध्ययन के पश्चात उन्होंने यह माना कि गीता कर्मप्रवर्तक ग्रंथ है, वैराग्य उसका मूल संदेश नहीं है अपितु जीवन-साधना का एक अनुषंगी पहलू है। तिलक जी ने स्पष्ट तर्क दिया कि जो श्रीकृष्ण युद्धभूमि से पलायन करने के आकांक्षी अर्जुन को चरणवार धर्मसिद्धांत निरूपण करते-करते, बीच बीच में सारी दार्शनिकता को दरकिनार करके स्पष्टतः चेताते हैं कि 'तू युद्ध कर', वे कर्म से अतीत होने के पक्ष को जीवन की प्रमुख गतिविधि के रूप में क्यों कर प्रतिपादित करेंगे? तिलक ने ध्यान दिलाया कि गीता में वर्णित योग शब्द, जिसका सैकड़ों बार गीता में प्रयोग किया गया है और जो गीता का मुख्य संदेश है, वह स्वयं ही कर्मयोग के अर्थ में है!

लोकमान्य तिलक ने माना, कि यद्यपि गीता में मोक्ष-प्राप्ति, ब्रह्मज्ञान और भक्ति जैसे निवृत्ति-प्रधान विषयों पर विवेचन हैं, पर गीता स्वयं निवृत्ति-प्रधान नहीं कर्म-प्रधान है। गीताशास्त्र के अनुसार, संसार में प्रत्येक मनुष्य के लिए कर्तव्य है कि वह परमेश्वर के चिंतन से शुद्धीकृत बुद्धि का अधिकारी बने, परंतु यह गीता का मुख्य विषय नहीं है। शुद्ध वेदान्तशास्त्र के आधार पर, कर्म-अकर्म तथा मोक्ष के उपायों के प्रसंग छेड़ते हुए बताया तो यह गया है कि 'एक तो कर्म छूटते ही नहीं हैं; और दूसरे, उनको छोड़ना भी नहीं चाहिए; एवं गीता में उस युक्ति का अर्थात् ज्ञानमूलक और भक्ति प्रधान कर्मयोग का ही प्रतिपादन किया गया है, कि जिससे कर्म करने पर कोई भी पाप नहीं लगता तथा अंत में उसी से मोक्ष भी मिल जाता है।' यानी आम के आम और गुठलियों के भी दाम।

यह बात मननीय है कि गीता के उद्भव का काल वह है जिसमें यह प्रश्न विशिष्ट था कि कर्म किया जाए या न किया जाए? गीता की संरचना इस प्रश्न के परिप्रेक्ष्य में की गई है। तिलक जी ने शंका व्यक्त की कि गीता के कई विवेचन आज के लोगों को अनावश्यक लग सकते हैं, क्योंकि जो कर्मविषयक द्वंद्व अर्जुन के समक्ष था वह अमूमन हमारे समक्ष नहीं होता। वह द्वंद्व अतीत में कहीं पीछे छूट गया है और उसके स्थान पर अन्य द्वंद्व समुपस्थित हैं। तिलक तर्क देते हैं कि कोहिनूर हीरा जब भारत से विदेश पहुँच गया तब उसके साथ जो प्रक्रिया की गई उसने कोहिनूर को और भी तेजस्वी बना दिया। यह बात सत्य के रत्नों पर भी लागू हो सकती है। अर्थात आजकल की परिस्थितियों के ताने-बाने में गीता की उद्भावनाओं को आलोकित किया जाए तो उसकी उपादेयता एक अन्यतम स्तर पर उद्घाटित होगी। पश्चिमी देशों से

वैज्ञानिक रूप-स्वरूप के ज्ञान की जो बाढ़ उस समय भी आ रही थी, उसके कारण कुछ लोगों के मन में यह बात बैठने लगी थी कि अध्यात्मशास्त्र के आधार पर किए गए कर्मयोग के प्राचीन विचार-शैली के विवेचन अब उतने उपयुक्त नहीं हो सकते। इसकी काट करने के लिए तिलकजी ने गीता रहस्य में गीता के सिद्धांतों के समानांतर विवेचित पश्चिमी विद्वानों के सिद्धांत भी समाविष्ट किए।

दूसरी ओर, तिलक जी ने अपनी गीता रहस्य की प्रस्तावना इस विनय से प्रारंभ की है कि 'संतों की उच्छिष्ट उक्ति है मेरी बानी। स्वामी विवेकानंद ने कहा था कि किसी महान व्यक्तित्व या विभूति में यह विशेषता पाई जाती है कि वे पहले से परंपरागत रूप से चले आ रहे ज्ञान में कमी निकालने या उसका अवमूल्यन करने के पक्षधर नहीं होते। वे तो ज्ञान की उस थाती के द्वारा अपने को उपकृत ही अनुभव करते हैं और पूर्व के लोगों से जो बातें कहने से या ध्यान में लाने से रह गई थीं, उन्हीं बातों को वे और पल्लवित करते हैं। जो सत्य पहले आविष्कृत करके विभिन्न रूपों में संसार पर प्रकट किया गया उस पर वे और अधिक प्रकाश विकीर्ण कर देना चाहते हैं। उनका मूल कार्य आलोचना का न होकर आपूरण का होता है। इस कसौटी पर हम गीता रहस्य को सौ प्रतिशत खरा उतरता हुआ पाते हैं। तिलक जी ने माना कि गीता एक महासागर है और उसमें अनेकों रहस्य समाए हुए हैं जिनका अगर व्यक्ति जीवन में पारायण करें तो अनगिनत मोती-माणिक्य निकलते चले जाएँगे। उन्होंने यह भी खुलकर स्वीकार किया कि यद्यपि उन्होंने गीता के लोकोपयोगी तत्त्व को उकेरने का प्रयास किया है, उसे विस्तार देकर स्पष्ट करने का यत्न किया है, फिर भी इस संभावना से इंकार नहीं किया जा सकता कि किन्हीं स्थलों पर बात अस्पष्ट ही रह गई होगी। इसके उपचारार्थ उन्होंने सजग पाठकों से यह अनुरोध किया है कि गीता रहस्य में यदि ऐसे स्थल उनकी दृष्टि में पड़ें तो वे अवश्य लेखक को उनका ध्यान दिलाएँ, ताकि आगे के संस्करण में उन कमियों को यथेष्ट प्रकार से दूर किया जा सके।

तिलक जी में यह स्वाभाविक छटपटाहट थी कि संसार में, विशेषकर भारत में एक आध्यात्मिक उत्क्रांति प्रकट हो। लोग धर्म और अध्यात्म को केवल व्यक्तिगत जीवन की उन्नति का साधन न बनाएँ। गीता रहस्य की प्रस्तावना के अंत में उन्होंने यह घोषणा की है कि 'प्रत्येक मनुष्य पूर्व अवस्था में ही – चढ़ती हुई उम्र में ही – गृहस्थाश्रम के, अथवा संसार के, इस प्राचीन शास्त्र को, जितनी जल्दी हो सके उतनी जल्दी समझे बिना न रहे।'

तिलक जी की इस उद्घोषणा में जो चेतावनी छिपी हुई है उस पर तनिक हमारा, हम आज के लोगों का, ध्यान जाना ही चाहिए। आज के हम अपने-अपने गृहस्थाश्रम को ही अपने मानव धर्म का सर्वस्व बनाए बैठे हैं। जबकि आचार्य रामचंद्र शुक्ल प्रभृत अनेक विद्वानों और समाजसेवियों ने कई प्रकार से यह कहा है कि गृह धर्म से कुल धर्म, कुल धर्म से समाज धर्म, समाज धर्म से राष्ट्र धर्म और राष्ट्र धर्म से विश्व धर्म ज्यादा बड़ा और उपादेय है। व्यापकतर धर्म के लिए लघुतर धर्म को त्याग देना चाहिए। आज इस बात को अच्छी तरह से हृदय में बसाने की जरूरत है, अन्यथा विश्व में आखिर किस तरह मानव-मात्र के हितों की रक्षा हो सकेगी। परिवार कल्याण, कल्याणकारी राज्य, मानवाधिकार, पर्यावरण संरक्षण, वैश्वीकरण जैसी अवधारणाएँ आज अस्तित्व में हैं, लेकिन इन अवधारणाओं को सामुदायिक स्वार्थपरताओं के चंगुल से मुक्त कराना होगा। योग एक व्यापक आशय और संभावना लिया हुआ शब्द है जो अपनी छत्र-छाया में ऐसी समस्त कल्याणकारी संकल्पनाओं का एकीकरण कर सकता है और इनमें एक ही विश्व मानव को प्रस्थापित कर सकता है। जब तक ऐसा नहीं होता तब तक मानव के भविष्य पर अनिश्चितता के बादल मंडराते रहेंगे। मनुष्य व्यापक हित की सोचे और उस पर योजनाबद्ध रीति से काम करे, यह अनिवार्य है और इसी में उसके संपूर्ण सरोकारों की संपूर्ति निहित है। गीता रहस्य के महत्त्व पर श्री अरविंद घोष ने कहा–

'मानवी श्रम, जीवन और कर्म की महिमा का उपदेश अपनी अधिकारवाणी से देकर, सच्चे अध्यात्म का सनातन संदेश गीता दे रही है, जो कि आधुनिक काल के ध्येयवाद के लिए आवश्यक है।'

यूको बैंक में राजभाषा की यात्रा : एक दृष्टि में

महात्मा गांधी द्वारा शुरू किए गए ऐतिहासिक 'भारत छोड़ो' आंदोलन के पश्चात् एक आधुनिक भारतीय बैंक की संकल्पना भारतीय उद्योग जगत के पुरोधा स्व. घनश्याम दास बिड़ला के मन में आई और इस संकल्पना को मूर्त रूप देते हुए 6 जनवरी, 1943 को 'दि यूनाइटेड कमर्शियल बैंक लि.' की स्थापना की गई। कालांतर में इस बैंक का 13 अन्य निजी स्वामित्व वाले भारतीय बैंकों के साथ 19 जुलाई 1969 को राष्ट्रीयकरण किया गया। संसद के एक अधिनियम द्वारा 30 दिसंबर, 1985 को इसका नाम 'यूको बैंक' कर दिया गया। पूरे भारत में बैंक की 43 अंचल कार्यालयों के साथ 3074 से अधिक सेवा इकाइयाँ फैली हुई हैं। इसकी उपस्थिति दो प्रमुख अंतर्राष्ट्रीय वित्तीय केंद्रों अर्थात् हांगकांग और सिंगापुर में भी है। इसके अलावा बैंक ने तेहरान, ईरान में भी बैंकिंग परिचालन शुरू किया है।

राजभाषा विभाग की स्थापना

बैंक ने वर्ष 1972 में एक मराठी भाषी श्री वाशिंकर जी को राजभाषा नोडल अधिकारी के रूप में नामित कर राजभाषा हिंदी में कार्य करना प्रारंभ किया। बैंक में प्रथम बार वर्ष 1973 में राजभाषा अधिकारी के रूप में श्री एस सी पालीवाल एवं सुश्री शशि त्रिपाठी की नियुक्ति की गई। बैंक में उपलब्ध अभिलेख के अनुसार बैंक की सर्वोच्च राजभाषा कार्यान्वयन समिति की प्रथम बैठक दिनांक 7 फरवरी, 1974 को श्री एस जे उत्तम सिंह, महाप्रबंधक की अध्यक्षता में आयोजित हुई थी। तब से लेकर जून, 2023 तिमाही तक 158वीं बैठक आयोजित हो चुकी है।

प्रथम हिंदी कार्यशाला का आयोजन

भारत सरकार की राजभाषा नीति के अनुसरण में हिंदी प्रशिक्षण हेतु प्रथम हिंदी कार्यशाला बैंक के मंडल कार्यालय, नई दिल्ली में 26-27 नवंबर, 1980 को आयोजित हुई। इस कार्यशाला का उद्घाटन बैंक के कार्यपालक निदेशक श्री जे एन पाठक ने किया था।

प्रथम राजभाषा अधिकारी सम्मेलन

प्रधान कार्यालय तथा मंडल कार्यालयों में कार्यरत राजभाषा अधिकारियों के लिए प्रथम राजभाषा अधिकारी सम्मेलन दिनांक 29-30 नवंबर, 1982 को प्रधान कार्यालय, कोलकाता में संपन्न हुआ। सम्मेलन का उद्घाटन बैंक के तत्कालीन कार्यपालक निदेशक श्री बी के चटर्जी ने किया।

सचिव-राजभाषा, गृह मंत्रालय, भारत सरकार का पहली बार बैंक में आगमन

भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग के सचिव एवं भारत सरकार के हिंदी सलाहकार श्री बी बी महाजन की उपस्थिति में बैंक के प्रधान कार्यालय में दिनांक 16 जनवरी, 1988 को एक विशेष बैठक आयोजित हुई। इस अवसर पर बैंक के तत्कालीन अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक श्री के मनमोहन शेणाई उपस्थित थे। उल्लेखनीय है कि दिनांक 28 जुलाई, 2021 को प्रधान कार्यालय द्वारा आयोजित राजभाषा संगोष्ठी में डॉ. सुमीत जैरथ, सचिव, राजभाषा विभाग, भारत सरकार का भी कोलकाता आगमन हुआ था। संगोष्ठी की अध्यक्षता बैंक के तत्कालीन प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी श्री अतुल कुमार गोयल ने की थी।

बैंक को सचल राजभाषा शील्ड

राजभाषा परिषद, कलकत्ता द्वारा कलकत्ता स्थित भारत सरकार के कार्यालयों उपक्रमों, और सरकारी क्षेत्र के बैंकों के बीच राजभाषा हिंदी के श्रेष्ठ कार्य निष्पादन हेतु आयोजित प्रतियोगिता में यूको बैंक को सचल राजभाषा शील्ड पश्चिम बंगाल के तत्कालीन महामहिम राज्यपाल श्री उमाशंकर दीक्षित ने बैंक के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक श्री शांति प्रसाद सेन गुप्ता को एक भव्य कार्यक्रम में दिनांक 19 दिसम्बर, 1985 को प्रदान किया।

बैंक के प्रकाशन :

यूको टॉवर एवं यूको अनुगूँज के प्रथम अंक

बैंक की क्रियाकलापों की आश्चर्यजनक संवृद्धि और कर्मचारियों के बीच संप्रेषण हेतु बैंक की गृह पत्रिका 'यूको टॉवर' का प्रथम अंक अप्रैल, 1965 में प्रकाशित किया गया। इसी प्रकार बैंक की हिंदी गृह पत्रिका 'यूको अनुगूँज' का प्रथम अंक दिसंबर, 2009 में प्रकाशित हुआ।

अन्य प्रकाशन :

राजभाषा नीति के अनुसार बैंक के परिपत्र, प्रपत्र, मैनुअल, संहिता और प्रक्रिया, वार्षिक प्रतिवेदन आदि द्विभाषी रूप में अनिवार्यत: प्रकाशित होते हैं। इसके अलावा बैंक ने राजभाषा हिंदी में लेखन को बढ़ावा देने के उद्देश्य से बैंकिंग/ आर्थिक के विभिन्न विषयों पर भी प्रकाशन करता रहा है।

प्रथम क्षेत्रीय राजभाषा पुरस्कार

राजभाषा में सर्वश्रेष्ठ कार्य निष्पादन हेतु राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा बैंक में पहली बार यूको बैंक, अंचल कार्यालय, गुवाहाटी को 'ग' क्षेत्र (पूर्वोत्तर) का वर्ष 1993-94 के लिए क्षेत्रीय राजभाषा पुरस्कार - द्वितीय प्राप्त हुआ। गुवाहाटी अंचल कार्यालय को लगातार तीन वर्षों तक क्षेत्रीय राजभाषा पुरस्कार प्राप्त होता रहा। इसके बाद लगातार हमारे कई अंचल कार्यालयों को क्षेत्रीय राजभाषा पुरस्कार प्राप्त होते रहे।

प्रथम राजभाषा कीर्ति पुरस्कार

राजभाषा में सर्वश्रेष्ठ कार्य निष्पादन हेतु भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग द्वारा यूको बैंक, प्रधान कार्यालय को पहली बार वर्ष 2020-21 के लिए राजभाषा कीर्ति पुरस्कार - प्रथम, वर्ष 2021-22 के लिए राजभाषा कीर्ति पुरस्कार - प्रथम तथा वर्तमान वर्ष 2022-23 में भी बैंक को राजभाषा कीर्ति पुरस्कार - तृतीय प्रदान करने की घोषणा हुई है।

समापन

इस तरह यूको बैंक राजभाषा नीति एवं नियमों के अनुपालन में सदैव अग्रणी रहा है। हमारा बैंक राजभाषा कार्यान्वयन के प्रति संकल्पित है। इस कार्यान्वयन में हमारे कार्यबल की भूमिका सर्वोपरि है। बैंक के प्रबंधन का सहयोग एवं मार्गदर्शन लगातार हमें प्राप्त होता रहा है। हम आगे भी राजभाषा कार्यान्वयन हेतु राजभाषा नीति-नियमों का अनुपालन अक्षरक्षः करते रहेंगे।

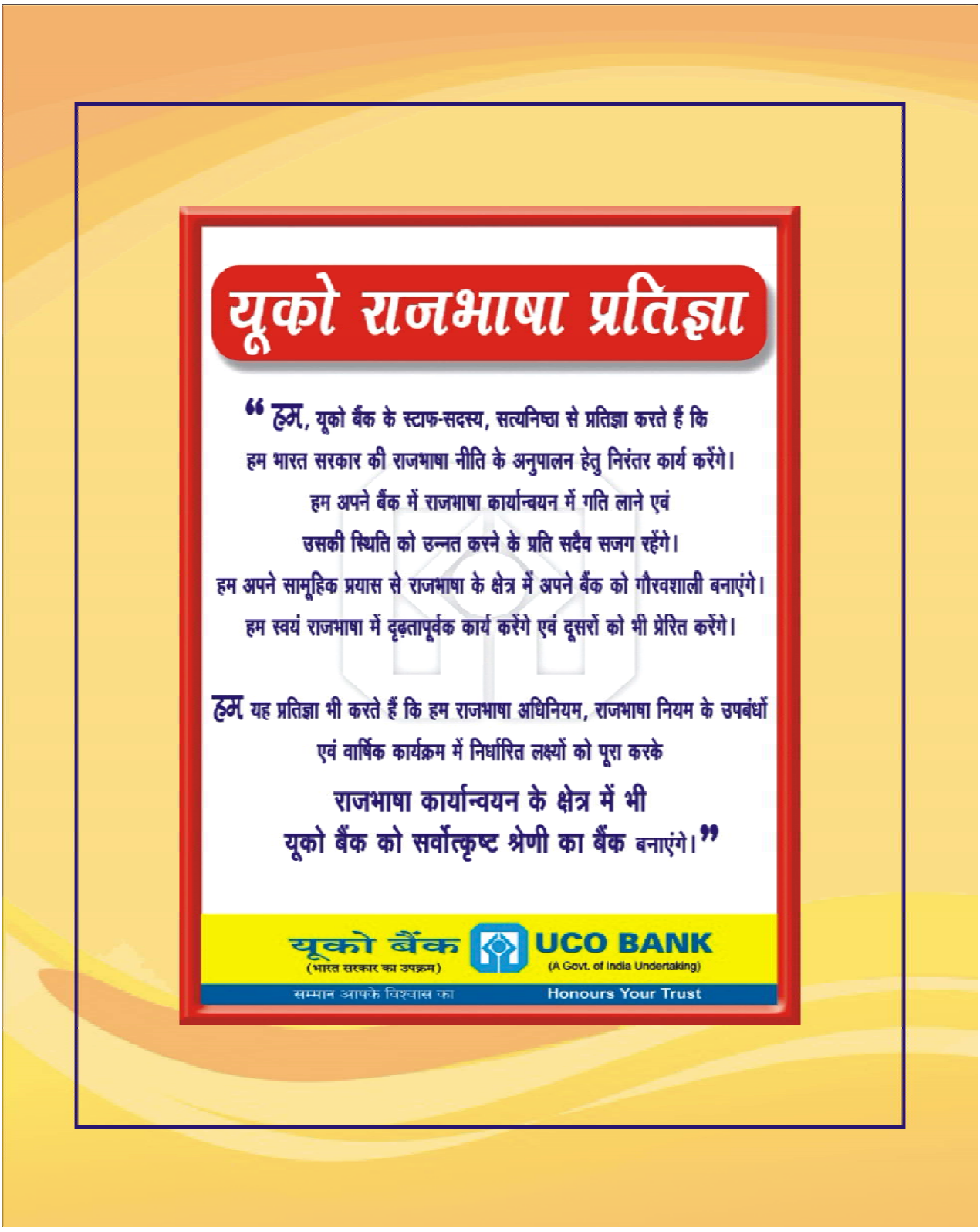
यूको राजभाषा प्रतिज्ञा
"हम, यूको बैंक के स्टाफ-सदस्य, सत्यनिष्ठा से प्रतिज्ञा करते हैं कि
हम भारत सरकार की राजभाषा नीति के अनुपालन हेतु निरंतर कार्य करेंगे।
हम अपने बैंक में राजभाषा कार्यान्वयन में गति लाने एवं
उसकी स्थिति को उन्नत करने के प्रति सदैव सजग रहेंगे।
हम अपने सामूहिक प्रयास से राजभाषा के क्षेत्र में अपने बैंक को गौरवशाली बनाएंगे।
हम स्वयं राजभाषा में दृढ़तापूर्वक कार्य करेंगे एवं दूसरों को भी प्रेरित करेंगे।
हम यह प्रतिज्ञा भी करते हैं कि हम राजभाषा अधिनियम, राजभाषा नियम के उपबंधों
एवं वार्षिक कार्यक्रम में निर्धारित लक्ष्यों को पूरा करके
राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में भी
यूको बैंक को सर्वोत्कृष्ट श्रेणी का बैंक बनाएंगे।"
यूको बैंक
(भारत सरकार का उपक्रम)
UCO BANK
(A Govt. of India Undertaking)
सम्मान आपके विश्वास का
Honours Your Trust

आज़ादी का अमृत महोत्सव
साइबर जागरूकता
यूको बैंक
UCO BANK
कार्ड का विवरण
पिन
कभी किसी के साथ साझा न करें
ओटीपी
पासवर्ड
बैंक कभी भी फोन / ईमेल / एसएमएस के जरिए आपकी संवेदनशील जानकारी नहीं माँगता है
यूको बैंक
(भारत सरकार का उपक्रम)
UCO BANK
(A Govt. of India Undertaking)
सम्मान आपके विश्वास का
Honours Your Trust
1800-103-0123 (Toll Free)
8334001234
7666399400
Follow us on